RNI No. : UPBIL/25/A0683
www.vicharsetu.com
वर्ष-01 | अंक-01 | नवंबर-दिसंबर 2025 | पृष्ठ संख्या-48

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक

प्रयागराज से प्रकाशित

मूल्य ₹ 40

संघ शताब्दी वर्ष विशेषांक

सृजन और संघर्ष के 100 साल

20 बिहार में बिछ गई चुनावी बिसात

30 भूतिया घर 'मोहिते का बाड़ा' में गूंजा- नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे...

Laddan Teacher Training College
A Trust For Education

LADDAN

TEACHER TRAINING COLLEGE

Recognized by NCTE, Delhi and Affilited to SCERT Lucknow

D.EL.Ed./B.T.C.

for Minority Institution

Hashim Ali (Bakshi Ji)
Director

Nazim Ali (Shiblu)
Manager

**Phulpur to Saidabad Road,
Dhurrw,Handia,
Prayagraj**

**Mob. : 9415632873,
9336392654**

13

सृजन और संघर्ष के 100 साल

आरएसएस भारतीय समाज के पुनर्गठन की वह प्रयोगशाला है जो विचार, सेवा और अनुशासन के आधार पर एक सांस्कृतिक राष्ट्र के निर्माण में जुटी है।

16

नेतागिरी की पाठशाला नहीं सेवा और संस्कार का केंद्र

जहां राजनीति को अक्सर सत्ता का माध्यम माना जाता है, वहीं कुछ संस्थाएं ऐसी भी हैं, जो सेवा और उत्तरदायित्व को सर्वोपरि मानती हैं।

18

महिला-बच्चों को बनाया मोहरा, एक हाथ पोस्टर एक हाथ पत्थर

आई लव मोहम्मद के नाम पर अघोषित जेहाद का कपट भरा चेहरा एकबार फिर देश के सामने आया है।

20

बिछ गई बिसात : किसकी शह किसको मात

विश्व में सबसे पहले बिहार की धरती से ही लोकतांत्रिक विचारधारा की परिकल्पना का उदय हुआ था। वैशाली गणराज्य की जनतांत्रिक सोच व शासन व्यवस्था...

46

चोरी-छिपे बिजनेसमैन से नरगिस फाखरी ने की शादी

नरगिस फाखरी, जिन्होंने रॉकस्टार फिल्म से दर्शकों का दिल जीता था, इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में हैं।

36

यूपी विधानसभा चुनावः पीडीए पर जूझ रही सपा-भाजपा

उप्र विधानसभा चुनाव 2027 में होने हैं लेकिन सरकार और प्रमुख राजनीतिक दल अभी...

24

फुस्स हो गया कांग्रेस के 'युवराज' का एटम बम!

आखिरकार, कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी का एटम बम 'फुस्स' हो गया।

आवश्यकता है

विचार सेतु

द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका

के लिए राज्य, मंडल, जिला स्तर पर संवाददाता, ब्यूरो प्रमुख एवं प्रतिनिधि की तथा विज्ञापन एवं मार्केटिंग के लिए भी कर्मठ युवक युवतियों की आवश्यकता है। संपर्क करें :

9415189919, 9598163216, 7007044100

E-mail – vicharsetu2024@gmail.com
vicharsetumagzine@gmail.com
Website – www.vicharsetu.com

विचार सेतु

वर्ष-01, अंक-01, नवम्बर-दिसंबर 2025

RNI No. : UPBIL/25/A0683
पृष्ठ संख्या-48, मूल्य- ₹ 40

सम्पादक : रेखा तिवारी

प्रधान सम्पादक : प्रदीप तिवारी, एडवोकेट
कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार

संरक्षक मण्डल
पदमश्री डॉ. सुनील जोगी, प्रेम जन्मेजय, रविनंदन सिंह, हर्ष वर्धन त्रिपाठी, डॉ. धनंजय चोपड़ा

समन्वय संपादक : शिवा शंकर पाण्डेय
राजनैतिक संवाददाता : भास्कर मिश्रा
सांस्कृतिक संवाददाता : राजेश ओझा

राज्य प्रतितिधि
उत्तर प्रदेश : विशाल ओझा
बिहार : डॉ. चंद्रकांत भट्ट
मध्य प्रदेश : सुमित ओरछा
दिल्ली/एनसीआर : काशी शर्मा
पंजाब : विजय गर्ग
राजस्थान : गगन अग्रवाल
उत्तराखंड : ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
हरियाणा : गजेन्द्र सिंह 'दहिया'
महाराष्ट्र : डॉ. मोतीलाल गुप्त 'आदित्य'
उड़ीसा : डॉ. रजनीकांत मिश्र
असम : त्रिदीप कलिता
त्रिपुरा : तनुज शाह

डिजाइन एवं प्रोडक्शन
एनएम मीडिया सॉल्यूशंस (9717177725)

विधिक सलाहकार
जयवर्धन त्रिपाठी, आदर्श पराशर

छायाकार : संजय सागर

पंजीकृत कार्यालय - 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा, प्रीतम नगर, धूमनगंज, प्रयागराज 211011
फोन: 95981632167007044100
वेब : www.vicharsetu.com
ई-मेल : vicharsetu2024@gmail.com

स्वामी और प्रकाशक रेखा तिवारी द्वारा आइडियल ग्राफिक्स 48/136/2, पानदरीबा, शाहगंज, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश-211003 से प्रकाशित।

संपादक-रेखा तिवारी*
मुद्रक : आइडियल ग्राफिक्स

इस पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं

लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित

इस चयन में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद प्रयागराज न्यायालय के अधीन होंगें।

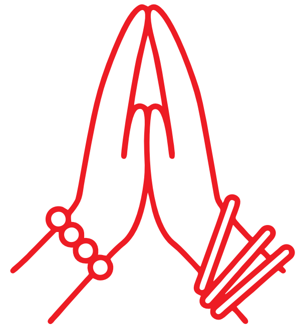

संघ का शताब्दी वर्ष

संघ केवल संगठन नहीं, राष्ट्रजीवन की धड़कन

जब किसी विचार की ज्योति एक व्यक्ति के अंतःकरण से उठकर संपूर्ण समाज को आलोकित करने लगती है, तब वह एक युग का प्राण बन जाती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का यह ऐतिहासिक अवसर उसी प्राणशक्ति का स्मरण और सम्मान है, जिसने भारत की आत्मा को पुनः जाग्रत किया। संगठन, सेवा और संस्कार के त्रिवेणी प्रवाह में राष्ट्रजीवन को नव चेतना दी।

सन 1925 में विजयादशमी के दिन, डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने जिस बीज को बोया था, वह आज एक विराट वटवृक्ष बन चुका है। इस वटवृक्ष की छाया में असंख्य कार्यकर्ता, संगठन और संस्थान राष्ट्र के पुनर्निर्माण में जुटे हैं। संघ की शाखाएं आज केवल व्यायाम या अनुशासन के केंद्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे भारत की सांस्कृतिक आत्मा की कार्यशाला बन गई हैं, जहां व्यक्ति में राष्ट्रनिष्ठा, सेवा-भाव और आत्मसंयम का संस्कार अंकुरित होता है।

विचार से कर्म तक की यात्राः संघ की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उसने विचार को व्यवहार में रूपांतरित किया। राष्ट्रवाद, केवल नारों या घोषणाओं में नहीं, बल्कि जीवनशैली में ढल गया। 'हम हिन्दू हैं' —यह घोषणा किसी अन्य के विरोध में नहीं, बल्कि भारत की आत्म पहचान के रूप में दी गई। डॉ. हेडगेवार ने कहा था—'हमारा राष्ट्र धर्म ही हमारी पहचान है।' इस विचार ने भारत को एकात्मता के सूत्र में पिरोने का कार्य किया।

पिछले 100 वर्षों में संघ की कार्यपद्धति में अद्भुत विस्तार हुआ। सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, विद्या भारती, भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिंदू परिषद से लेकर असंख्य सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संगठनों के माध्यम से संघ ने समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपना प्रभाव पहुंचाया। यह कोई राजनैतिक विस्तार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक

पुनर्जागरण का जीवंत उदाहरण है।

संगठन में सादगी और कार्य में व्यापकताः संघ की शाखा में कोई झंडा नहीं, कोई महलनुमा भवन नहीं, कोई प्रचारक मंच नहीं—बस खुले मैदान में एक बांस की लाठी, गान, प्रार्थना और अनुशासन। और, इसी सादगी में वह विराटता निहित है, जिसने लाखों युवाओं के हृदय में भारत माता के प्रति समर्पण का भाव जगाया।

आत्मावलोकन और नव संकल्प का क्षणः शताब्दी वर्ष का अर्थ केवल शताब्दी उत्सव नहीं है। यह, वह क्षण है जब हमें अपने कार्य, प्रभाव और उद्देश्य का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए। संघ ने जहां सांस्कृतिक चेतना का पुनरुत्थान किया, वहीं समाज में जाति, भाषा, प्रांत और वर्ग के भेदभाव को मिटाने का कार्य भी किया।

राष्ट्र के केंद्र में, राजनीति से परेः अक्सर संघ को केवल राजनीतिक दृष्टि से देखा जाता है, परंतु संघ का उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन है। राजनीति उसके लिए माध्यम हो सकती है, लक्ष्य नहीं। संघ की दृष्टि में राष्ट्र का पुनर्निर्माण केवल शासन के माध्यम से नहीं, बल्कि समाज के नैतिक पुनर्जागरण से संभव है।

'विचार सेतु' का दायित्वः 'विचार सेतु' का यह प्रथम अंक/ विशेषांक संघ के शताब्दी वर्ष के उस अमर प्रसंग को समर्पित है, जिसने भारत के इतिहास की धारा को मोड़ा। यह अंक केवल संघ की उपलब्धियों का संकलन नहीं, बल्कि उस विचार का उत्सव है, जिसने हमें आत्मनिर्भर, आत्माभिमानी और आत्मजाग्रत बनाया।

पत्रिका के रूप में हमारा प्रयास यही है कि हम विचार और कर्म के बीच सेतु बनें—जहां बौद्धिक विमर्श, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व एक साथ प्रवाहित हों। इस अंक में संघ के विभिन्न पक्षों—उसके इतिहास, दर्शन,सेवा कार्यों, सामाजिक दृष्टि और भविष्य की चुनौतियों पर विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित किए गए हैं।

संघ का शताब्दी वर्ष केवल स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि नवयुग की दिशा तय करने का क्षण है। भारत विश्वगुरु बने – यह केवल नारा नहीं, बल्कि संघ का जीवंत संकल्प है। इसके लिए आवश्यक है कि समाज में चरित्र, अनुशासन और करुणा के संस्कार गहराएं। जब प्रत्येक भारतीय यह अनुभव करने लगे कि 'मैं भारत हूं और भारत मुझमें है', तब ही यह राष्ट्र वास्तविक अर्थों में अखंड और समृद्ध होगा। यही संघ का संदेश है, और यही इस संपादकीय का सार भी –'संघ केवल संगठन नहीं, यह राष्ट्रजीवन की धड़कन है।'

भविष्य की दिशाः 'विचार सेतु' का यह केवल पहला अंक है, एक बीज है—जिसे हम निरंतर श्रम, संवाद और रचनात्मकता से एक वटवृक्ष बनाना चाहते हैं। हमारा उद्देश्य केवल त्रैमासिक या अर्धवार्षिक प्रकाशन नहीं है, बल्कि एक सतत विचार-आंदोलन तैयार करना है।

हम भविष्य में विविध विषयों पर केंद्रित विशेषांक निकालने की योजना बना रहे हैं—जैसे स्त्री लेखन विशेषांक, पर्यावरण विशेषांक, लोक-संस्कृति विशेषांक, आदि। हम वेब संस्करण, ऑडियो बुक और पॉडकास्ट प्रारूपों पर भी कार्य करने की योजना बना रहे हैं ताकि विचारों की पहुंच अधिकाधिक लोगों तक हो सके।

हम चाहते हैं कि यह पत्रिका एक संग्रहणीय सामग्री बने – न केवल अध्ययन के लिए, बल्कि प्रेरणा और चिंतन के लिए भी।

रेखा तिवारी

रेखा तिवारी

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

पत्र संख्या-375/[illegible]/2025
लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 0 6 OCT 2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि प्रयागराज से प्रकाशित द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका 'विचार सेतु' का 'संघ के 100 वर्ष' विषय पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा, समर्पण, संगठन और अप्रतिम अनुशासन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहचान है। मातृभूमि के कल्याण के लिए समर्पित यह संगठन भारत की संस्कृति व परम्परा का पालन करते हुए अनेक सेवा प्रकल्पों का संचालन कर रहा है। राष्ट्र सेवा को समर्पित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा पर केन्द्रित विशेषांक का प्रकाशन सराहनीय है। मुझे आशा है कि इसमें पाठकों के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय सामग्री का संकलन किया जाएगा।

प्रकाशन की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2289017 / 2289010 / 2289167 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

पुण्यश्लोक 300

देवेंद्र फडणवीस
मुख्यमंत्री
महाराष्ट्र

सत्यमेव जयते

देवेंद्र फडणवीस

मंत्रालय
मुंबई ४०० ०३२

जा.क्र/मु.मं.स/ज.क./१८८/२०२५
दि. १२ अगस्त, २०२५

शुभकामनाएं

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'विचार सेतु' द्वि-भाषी राष्ट्रीय पत्रिकाद्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर "संघ के सौ वर्ष" विषय पर केन्द्रित प्रथम विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर सम्पादकीय टीम, पाठकों तथा इस रचनात्मक प्रयास से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

पिछले सौ वर्षों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और सेवा की भावना को समाज में प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगठन ने सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य किया है। संघ ने आपातकालीन परिस्थितियों में व्यापक सेवा कार्यों के माध्यम से समाज को सहयोग प्रदान किया है। साथ ही, युवा पीढ़ी में संगठन, नेतृत्व और राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा जागृत की है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सौ साल मे जो काम किये है वह अनुकरणीय और प्रेरणादायी हैं। आशा करता हूँ कि इस विशेषांक के माध्यम से इन उपलब्धियों और योगदानों का विस्तृत रुप से दस्तावेजीकरण होगा, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

संघ के सौ वर्ष विशेषांक के प्रकाशन हेतु तथा 'विचार सेतु' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(देवेंद्र फडणवीस)

दूरध्वनी : ०२२-२२०२ ५१५१/२२०२ ५२२२, ई-मेल : cm@maharashtra.gov.in,
वेब साईट : www.maharashtra.gov.in

भजन लाल शर्मा

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि 'विचार सेतु' पत्रिका द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर "संघ के सौ वर्ष" विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पिछले सौ वर्षों में राष्ट्र निर्माण, सामाजिक समरसता और आपदा राहत में अहम भूमिका निभाई है। संघ युवा पीढ़ी में सेवा, समर्पण, देशभक्ति और भारतीय संस्कृति के मूल्यों का संचार रहा है। संघ के विचार और कार्य सबके लिए प्रेरणास्पद हैं।

'विचार सेतु' पत्रिका द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर विशेषांक प्रकाशित करने की पहल सराहनीय है। मुझे आशा है कि यह विशेषांक सुधि पाठकों के लिए उपयोगी साबित होगा। साथ ही, लोगों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों और कार्यों से अवगत कराने का माध्यम बनेगा।

मैं इस विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(भजन लाल शर्मा)

केशव प्रसाद मौर्य
KESHAV PRASAD MAURYA

उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश
Deputy Chief Minister
Uttar Pradesh

केशव प्रसाद मौर्य

—: शुभकामना संदेश :—

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **"संघ के सौ वर्ष"** का यह ऐतिहासिक अवसर न केवल एक संगठन की यात्रा का प्रतीक है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण की उस अद्भुत गाथा का भी परिचायक है, जिसमें सेवा, समर्पण और संस्कारों की अविरल धारा प्रवाहित हुई है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बीते एक शताब्दी में भारतीय समाज के विभिन्न आयामों को सकारात्मक दिशा देने का कार्य किया है चाहे वह सांस्कृतिक जागरण हो, सामाजिक समरसता हो अथवा राष्ट्रीय चरित्र निर्माण।

'विचार सेतु' पत्रिका द्वारा इस अमूल्य यात्रा को शब्दों में पिरोने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। यह प्रवेशांक न केवल आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनेगा, बल्कि भारत की आत्मा को समझने का माध्यम भी होगा।

मैं **'विचार सेतु'** की संपादकीय टीम को इस विशिष्ट प्रयास के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ। आपका यह नवप्रयास समाज में विचार, संवाद और चेतना के सेतु का कार्य करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं।

सद्भावी,

(केशव प्रसाद मौर्य)

सुश्री रेखा तिवारी जी,
(सम्पादक)
'विचार सेतु'
पता–11/2 सी/1 क्यू भोला का पुरा,
प्रीतम नगर, धूमनगंज, प्रयागराज
मो0–7007044100, 9598163216

कार्यालय : कक्ष संख्या 101, विधान भवन, लखनऊ–226001, दूरभाष : 0522–2238217, 2237047 (का0); 0522–2236978 (फैक्स), 2239990 (आ0)
email: dycmkpm@gmail.com

जवाहर सिंह बेढ़म
राज्यमंत्री
गौपालन, पशुपालन एवं डेयरी,
स्य विभाग, राजस्थान सरकार

जवाहर सिंह बेढ़म

सत्यमेव जयते

कार्यालय :
कमरा नं. 6316, मंत्रालय भवन,
शासन सचिवालय, जयपुर (राज.)
दूरभाष : 0141-2227925
ई-मेल: stateministerhomerajasthan@gmail.com

क्रमांकःरा.मं./गृह/2025/R-1145
जयपुर, दिनांक 22/07/2025

बधाई सन्देश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि विचार सेतु के रूप में एक गंभीर, सृजनशील एवं साहित्यिक विचारधारा से ओतप्रोत द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हिन्दी भाषा के संवर्धन की दिशा में एक सशक्त कदम है, बल्कि समाज को विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों एवं विचारों के बीच संवाद और समन्वय का अवसर भी प्रदान करती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा केवल संगठन का इतिहास नहीं, अपितु राष्ट्रसेवा की अनवरत साधना की वह गाथा है, जिसने भारतवर्ष में सांस्कृतिक जागरण, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को नई दिशा दी है। ऐसे महनीय प्रसंग पर "विचार सेतु" पत्रिका द्वारा यह विशेषांक प्रकाशित किया जाना अत्यंत सराहनीय एवं कालप्रासंगिक पहल है।

आपके संपादकीय नेतृत्व में यह अंक निःसंदेह संघ के शताब्दी वर्ष को न केवल शब्दों में, अपितु भावना और विचारों में भी प्रतिबिंबित करेगा। यह विशेषांक संघ की विचारधारा, अनुशासन, सेवा, और राष्ट्र के लिए किए गए विविध योगदानों को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत कर भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा। सौ वर्षों का यह पर्व राष्ट्रनिर्माण की नई प्रेरणा बनकर खिले।

शुभकामनाओं सहित्

22/7/25
(जवाहर सिंह बेढ़म)
राज्य मंत्री

रेखा तिवारी जी,
संपादक विचार सेतु,
द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका

निवासः- 18-ए, सिविल लाईन, जयपुर-302006 • फोन नं. : 0141-2220647

प्रो० सत्यकाम
कुलपति
Prof. Satyakam
Vice Chancellor

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
U.P. RAJARSHI TANDON OPEN UNIVERSITY
Tel : +91 532 2447028 (O)
Fax : +91 532 2447032
e-mail. : vcuprtou@yahoo.co.in
: vc@uprtou.ac.in

दिनांक 14 अक्टूबर, 2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि प्रयागराज से प्रकाशित द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका **"विचार सेतु"** के 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष' विषय पर केन्द्रित विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पिछले 100 वर्षों में राष्ट्र निर्माण, सामाजिक समरसता, सेवा, समर्पण और अप्रतिम अनुशासन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहचान है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय ज्ञान परंपरा के बीच एक गहरा संबंध है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक की विचारधारा में भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण स्थान है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दृष्टि में भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धार्मिक या दार्शनिक विचारों तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक मूल्य भी शामिल हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व कल्याण के लिए महत्वपूर्ण संदेश है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं वसुधैव कुटुम्बकम, सहिष्णुता और विविधता तथा आत्मनिर्भरता और स्वदेशी पर जोर देता है। इसका उद्देश्य भारतीय समाज को मजबूत और एकजुट करना है।

भारतीय जीवनशैली परंपरागत मूल्यों, सामाजिक समरसता, परस्पर स्नेहएवं आत्मीयता पर आधारित है। मानवीय मूल्यों के विकास एवं आदर्श के उन्नयन में भारतीय जीवन शैली की महत्वपूर्ण उपादेयता है।

राष्ट्र सेवा को समर्पित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा पर केन्द्रित विशेषांक का प्रकाशन सराहनीय है। मेरा अटूट विश्वास है कि प्रस्तावित विशेषांक सुधि पाठकों के लिए उपयोगी साबित होगा। मैं इस पुनीत कार्य के लिए द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका **"विचार सेतु"** के सम्पादकीय मण्डल को साधुवाद देता हूँ एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(प्रोफेसर सत्यकाम)

University Campus, Shantipuram (Sector-F), Phaphamau, Prayagraj -211021, U.P., India.
website : www.uprtou.ac.in

डॉ. सुनील जोगी
(राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से सम्मानित)
(अंतराष्ट्रीय कवि,साहित्यकार)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि 'विचार सेतु' द्विभाषी राष्ट्रीय पत्रिका द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसरपर प्रवेशांक प्रकाशित किया जा रहा है। यह न केवल संघ के शताब्दी वर्ष का गौरवपूर्ण दस्तावेज होगा, बल्कि भारतीय संस्कृति, संगठन, सेवा और राष्ट्रनिष्ठा के मूल भावों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का एक महत्त्वपूर्ण सेतु भी बनेगा।

संघ ने अपने एक शताब्दी के गौरवमयी सफर में देश के चरित्र निर्माण, सामाजिक समरसता, राष्ट्रभक्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यह विशेषांक उस यात्रा के अनुभवों, आदर्शों और मूल्यों को अभिव्यक्त करने का श्रेष्ठ माध्यम सिद्ध होगा।

मैं विचार सेतु की संपादक श्रीमती रेखा तिवारी और पूरी संपादकीय टीम को इस सार्थक पहल के लिए हृदय से बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ कि यह अंक पाठकों के मन में राष्ट्रीय चेतना और सकारात्मक विचारों का संचार करे।

पद्मश्री डॉ. सुनील जोगी
(प्रख्यात हास्य कवि,
लेखक एवं समाजसेवी)

5184-ATS ADVANTAGE,INDIRAPURAM GHAZIABAD-201014.U.P
Phone: 9811005255 / 8430005255
Email:suniljogikavi@gmail.com
www.drsuniljogi.com

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सृजन और संघर्ष के 100 साल

साभार : सोशल मीडिया

साभार : सोशल मीडिया

प्रो. संजय द्विवेदी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) भारतीय समाज के पुनर्गठन की वह प्रयोगशाला है जो विचार, सेवा और अनुशासन के आधार पर एक सांस्कृतिक राष्ट्र के निर्माण में जुटी है। 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की अनोखी भारतीय दृष्टि से उपजा यह संगठन आज अपनी शताब्दी के द्वार पर खड़ा है। यह केवल संगठन विस्तार की नहीं, बल्कि भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान की एक अनवरत यात्रा है। 100 वर्षों की इस साधना में संघ और इसके स्वयंसेवकों ने दिखाया कि यदि लक्ष्य पवित्र हो, मार्ग अनुशासित हो और कार्यकर्ता समर्पित हों तो सरकारी सहयोग के बगैर भी लक्ष्य की ओर बढ़ा जा सकता है। संघ के स्वयंसेवकों की सेवा-भावना समाज के सबसे वंचित वर्गों तक

साभार : सोशल मीडिया

पहुंचती है। सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, एकल विद्यालय, राष्ट्र सेविका समिति और आरोग्य भारती जैसी संस्थाओं का उद्देश्य लोगों को आत्मनिर्भर, शिक्षित और संस्कारित बनाना है।

संघ ने प्रारंभ से ही यह अनुभव किया कि एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है, जो केवल ज्ञान नहीं, बल्कि संस्कार दे। इस विचार की परिणति विद्या भारती के रूप में हुई। देशभर में फैले इसके विद्यालयों में लाखों छात्र आधुनिक शिक्षा संग भारतीय संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रबोध की गंगोत्री में स्नान भी कर रहे हैं।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने छात्र राजनीति में एक नई संस्कृति का प्रारंभ किया। 'शिक्षक अध्यक्ष' की परंपरा, 'शैक्षिक परिवार' का विचार और संगठन के कार्यों में राष्ट्र के प्रति समर्पण–ये सब अभाविप को विशिष्ट बनाते हैं। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, भारतीय शिक्षण मंडल और अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ जैसे संगठनों ने शिक्षा नीति निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' संघ प्रेरित वैचारिक चेतना का मूर्त रूप मानी जा सकती है।

उपभोक्ता हितों की रक्षा के लिए अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, साहित्यिक जगत में हस्तक्षेप करती अखिल भारतीय साहित्य परिषद और कला-संस्कृति को संवारती संस्कार

साभार : सोशल मीडिया

साभार : सोशल मीडिया

भारती–संघ की इस बहुआयामी दृष्टि की प्रतीक हैं। भारत विकास परिषद, लघु उद्योग भारती, भारतीय किसान संघ, सहकार भारती, स्वदेशी जागरण मंच भारत के सशक्तिकरण, स्वदेशी चेतना और किसान कल्याण को समर्पित हैं। ये सभी संगठन संघ की उस मूल भावना को मूर्त करते हैं, जो कहती है कि परिवर्तन केवल सरकार से नहीं, समाज से होता है।

राम मंदिर निर्माण के माध्यम से विश्व हिन्दू परिषद ने अभूतपूर्व लोक जागरण किया। इस ऐतिहासिक जनांदोलन ने भविष्य के भारत की आधारशिला रखी। जाति, पंथ, भाषा से ऊपर उठकर चले इस महाभियान ने स्व. अशोक सिंघल जैसा नायक दिया, जिसने समाज और संत शक्ति के समन्वय से समरसता की धारा को तेज गति से प्रवाहित किया।

संघ ने श्रमिक आंदोलन को संघर्ष की नहीं, संवाद और संगठन की दिशा दी। भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) इसका जीवंत उदाहरण है। दत्तोपंत ठेंगड़ी जैसे विचारकों के मार्गदर्शन में बीएमएस देश का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन बना, जिसने मजदूरों को राष्ट्र निर्माण का सहभागी बनाने का कार्य किया।

संघ को प्रायः अल्पसंख्यक विरोधी कहा गया, किंतु इसके विपरीत संघ ने राष्ट्र को धर्म और जाति की संकीर्णताओं से ऊपर रखकर देखा है। 'वसुधैव कुटुंबकम' के भाव के साथ संघ ने मुस्लिम समाज के साथ संवाद और समरसता को बल दिया। राष्ट्रीय मुस्लिम मंच इसका मूर्त उदाहरण है। इसी प्रकार राष्ट्रीय सिख संगत ने सिख और हिंदू समाज के बीच भेद बनाने के लिए खींची गई रेखाओं को मिटाने का कार्य किया है।

संघ की दृष्टि में भारत केवल एक भूखंड नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक जीवित सत्ता है, जिसमें प्रत्येक नागरिक का स्थान है–चाहे उसकी जाति, पंथ या भाषा कोई भी हो।संघ का मूल कार्यक्षेत्र राजनीति नहीं है, परंतु उसके स्वयंसेवकों ने राजनीति में प्रवेश कर उसे मूल्यनिष्ठा, सेवा और राष्ट्रधर्म से जोड़ा है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी और नरेंद्र मोदी जैसे नायक संघ की विचारभूमि से निकले तपस्वी हैं, जिन्होंने राजनीति को राष्ट्रसेवा का माध्यम बनाया। भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से संघ की राष्ट्रवादी विचारधारा को राजनीतिक मंच मिला, जिसने भारत की राजनीतिक संस्कृति को स्थायित्व, उद्देश्य और राष्ट्रबोध प्रदान किया।

संघ की सबसे विशिष्ट विशेषता उसकी 'शाखा' है। यह केवल दिनचर्या का अनुशासन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और समाज संगठन की पाठशाला है। यहां खेल, योग, गीत, व्याख्यान और अभ्यास के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, सेवा और अनुशासन के बीज रोपे जाते हैं। शाखा का वातावरण सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है। आरएसएस एक वैचारिक आंदोलन है। उसने दिखाया है कि संगठन, विचार और समर्पण के बल पर समाज को बदला जा सकता है और राष्ट्र का नव निर्माण संभव है। संघ की यात्रा सेवा से समरसता तक, अनुशासन से राष्ट्रधर्म तक और शाखा से संसद तक–हर पड़ाव पर भारत की आत्मा को जागृत करती है। वह भारत को केवल एक राजनीतिक राष्ट्र नहीं, एक सांस्कृतिक चेतना के रूप में स्थापित करना चाहता है। संघ की शताब्दी यात्रा भारत की उस यात्रा का प्रतीक है, हजारों वर्षों की सभ्यता, संस्कृति और साधना का प्रतिफल है। यात्रा निरंतर चल रही है–भारत के निर्माण, उत्थान व पुनः विश्वगुरु बनने की दिशा में।

(लेखक भारतीय जन संचार संस्थान-आईआईएमसी, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक हैं।)

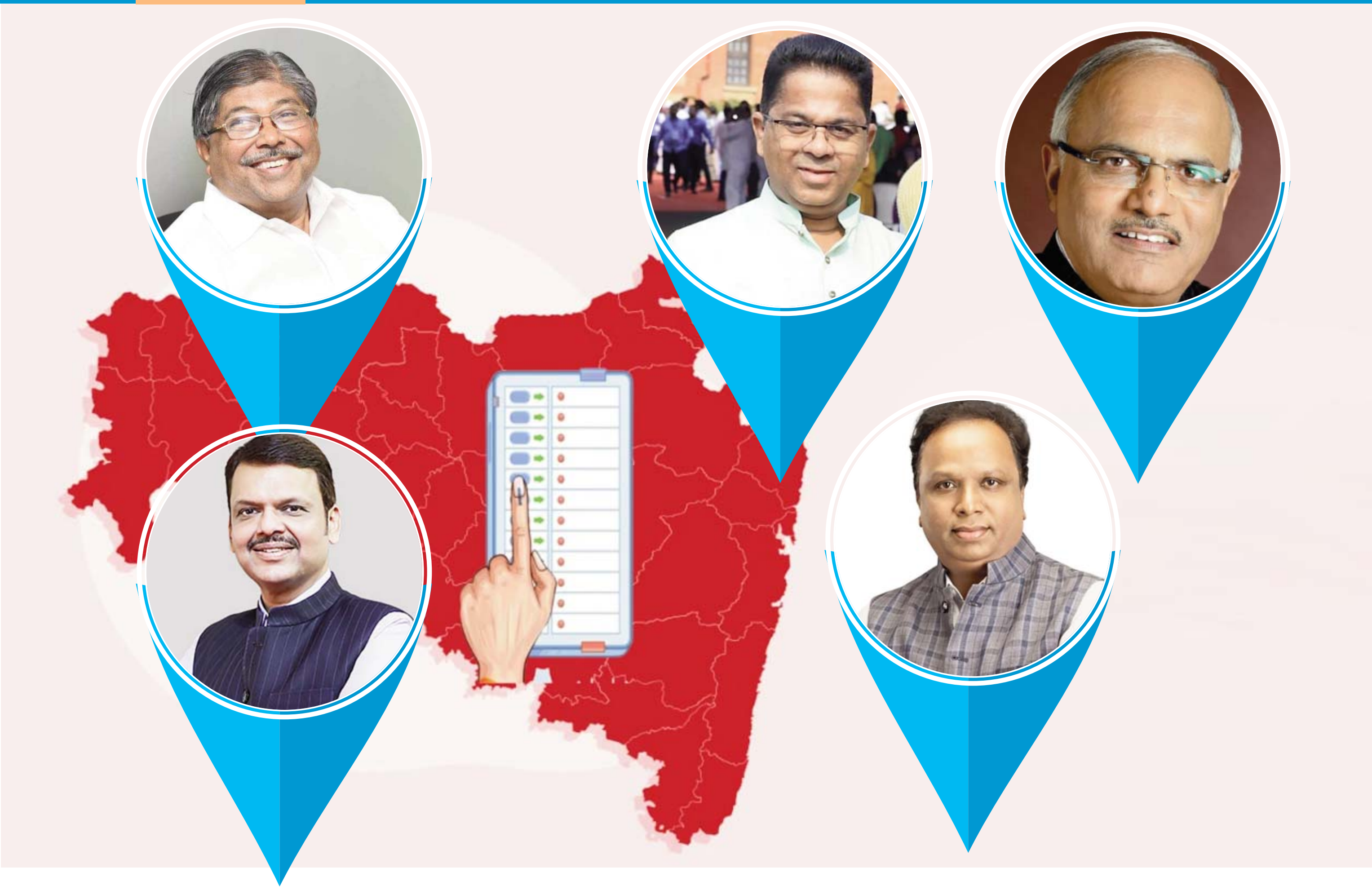

नेतागिरी की पाठशाला नहीं सेवा और संस्कार का केंद्र

अभिषेक पांडेय

जहां राजनीति को अक्सर सत्ता का माध्यम माना जाता है, वहीं कुछ संस्थाएं ऐसी भी हैं, जो सेवा और उत्तरदायित्व को सर्वोपरि मानती हैं। महाराष्ट्र के ठाणे (मुंबई) स्थित रामभाऊ प्रबोधिनी एक ऐसी ही संस्था है, जो राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित युवाओं को तैयार करने का कार्य कर रही है। इसे महाराष्ट्र की राजनीति में नेतृत्व की प्रयोगशाला माना जाता है। इसका नाम प्रसिद्ध राष्ट्रवादी विचारक और जनसेवक रामभाऊ महाडिक के नाम पर रखा गया, जो राष्ट्र सेवा, सामाजिक संगठन और विचारशील नेतृत्व के प्रतीक रहे। उनका यह मत था कि राजनीति का मूल धर्म सेवा है और सेवा का सबसे ऊंचा रूप जन-नेतृत्व है। इसी दर्शन से प्रेरित होकर स्थापित रामभाऊ प्रबोधिनी का उद्देश्य ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जो विचार से कर्म और कर्म से जननेतृत्व तक पहुंचें। प्रबोधिनी में प्रशिक्षण केवल भाषण,

कला या राजनैतिक रणनीति तक सीमित नहीं, बल्कि यह समग्र नेतृत्व विकास का मॉडल प्रस्तुत करता है। सुबह शाखा, योग, सामूहिक संवाद, ग्रुप एक्टिविटी और सामुदायिक भ्रमण होता है। इनसे सेवा और अनुशासन का विकास किया जाता है।

साक्षात्कार :-

राजेश पाटील (पूर्व प्रशिक्षु, वर्तमान पार्षद, ठाणे नगर निगम)

प्रश्नः आपने प्रबोधिनी से क्या सीखा, जो आपको सार्वजनिक जीवन में आज काम आता है?

उत्तरः मैंने सीखा कि नेता बनना आसान है, लेकिन जनप्रतिनिधि बनना कठिन। प्रबोधिनी ने मुझे जनता की बात सुनना, समझना और संवेदनशीलता के साथ प्रतिक्रिया देना सिखाया।

मिलिंद पानसरे (वरिष्ठ विचारक, पूर्व प्रशिक्षक)

साभार : सोशल मीडिया

प्रशिक्षण की अवधि व चरण

चरण	अवधि	उद्देश्य
प्रारंभिक शिविर	7-10 दिन	वैचारिक परिचय व नेतृत्व कौशल
माध्यमिक प्रशिक्षण	15-30 दिन	नीति, जनसंपर्क, विचार-विन्यास
दीर्घकालीन आवासीय	3-6 माह	व्यावहारिक, राजनीति, जनसंवाद, संगठन कौशल

प्रश्नः क्या आज भी युवाओं में वैचारिक नेतृत्व की भूख है?

उत्तरः बिल्कुल है, लेकिन दिशा देने वाले मंच कम हैं। रामभाऊ प्रबोधिनी युवाओं को न केवल मंच देती है, बल्कि उन्हें विचार से जोड़ती है और यही उसकी असली ताकत है।

भाजपा और संघ के प्रभावशाली नेता प्रबोधिनी की देन भाजपा से जुड़े नाम

देवेंद्र फडणवीस (मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र)

गिरीश महाजन (वरिष्ठ भाजपा नेता)

आशीष शेलार (मुंबई भाजपा के प्रमुख नेता)

चंद्रकांत पाटिल (मंत्री, संगठनकर्ता)

विनोद तावड़े (भाजपा राष्ट्रीय संगठन सचिव) संघ परिवार से जुड़े प्रशिक्षित/संबद्ध नेताः

डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे (राज्यसभा सांसद, विचारक)

प्रवीण तोगड़िया (पूर्व विहिप अध्यक्ष)

मिलिंद पानसरे (संगठन प्रमुख)

इन नेताओं की कार्यशैली में एक साझा तत्व देखने को मिलता है और वह है अनुशासन, संवाद और जनहित पर केंद्रित दृष्टिकोण। यही प्रबोधिनी की पहचान है। रामभाऊ प्रबोधिनी के प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह विचारधारा और व्यवहार को एक साथ लेकर चलता है। यहां, यह स्पष्ट किया जाता है कि नेतृत्व केवल चुनाव जीतने की प्रक्रिया नहीं है, यह समाज में उत्तरदायित्व लेने की साधना है।

नेतृत्व प्रशिक्षण में शामिल है

भारतीय संविधान का व्यावहारिक ज्ञान, भारतीय संस्कृति और विचारधारा पर सत्र, समाज में कार्य करने की नैतिकता, मीडिया संवाद और डिजिटल राजनीति की शिक्षा। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को विभिन्न समाजोपयोगी कार्यों से जोड़ा जाता है, जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा व स्वास्थ्य सर्वे, जल संरक्षण और स्वच्छता अभियान, झुग्गी-झोपड़ी (मलिन बस्ती) वाले क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण कार्य, नगर पालिका व जनसंपर्क अभियानों में भागीदारी। ये अभ्यास, उन्हें न केवल यह समझाते हैं जनता किन समस्याओं से जूझ रही है, उन्हीं की भाषा में संवाद करने की शक्ति भी देते हैं। रामभाऊ प्रबोधिनी ने भारतीय राजनीति को ऐसे नेता दिए हैं जो विचार, संकल्प व सेवा के मूल सिद्धांतों पर खरे उतरते हैं। जब राजनीति में शोर अधिक और संवाद कम होता जा रहा है, ऐसी संस्थाएं लोकतंत्र की गुणवत्ता को बनाए रखने की अदृश्य रीढ़ बन चुकी हैं। जहां नेतृत्व विचार से पैदा होता है, न कि सत्ता की भूख से। **रामभाऊ प्रबोधिनी से जुड़े नेताः** चरित्र से कर्म और कर्म से परिवर्तन की यात्रा। भविष्य के राजनेताओं के लिए एक वैचारिक गुरुकुल।

साभार : सोशल मीडिया

महिला-बच्चों को बनाया मोहरा, एक हाथ पोस्टर एक हाथ पत्थर

शिवा शंकर पाण्डेय

आई लव मोहम्मद के नाम पर अघोषित जेहाद का कपट भरा चेहरा एकबार फिर देश के सामने आया है। देश को अराजकता के आग की भट्ठी में झोंकने की ये वो गहरी साजिश थी, जो समय रहते ही पकड़ में आ गई। देश एक बार फिर तबाही वाले दंगे की चपेट में आने से बच गया। उत्तर प्रदेश के अलावा देश के कई राज्यों उत्तराखंड गुजरात तेलंगाना के शहरों में आई लव मोहम्मद के पोस्टर लेकर लोग सड़कों पर उतरे और प्रदर्शन के बहाने अराजकता फैलाने की भरपूर कोशिश की।

उत्तर प्रदेश में उन्नाव, बरेली, लखनऊ, कौशांबी, महाराजगंज से लेकर प्रयागराज तक जैसे कई जिले में भी आई लव मोहम्मद का पोस्टर लेकर बवाल करने की कोशिश की गई। बावजूद इन सबके शासन - प्रशासन के सूझ बूझ और तुरंत तगड़ा एक्शन लेने की वजह से कई शहर बड़ी अनहोनी से बच गए। गौर से देखें तो लखनऊ प्रदेश की राजधानी, महाराजगंज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जिले गोरखपुर के बगल का हिस्सा, उन्नाव और कौशांबी डिप्टी सीएम बृजेश पाठक और केशव प्रसाद मौर्य का जिला, प्रयागराज केशव प्रसाद मौर्य की राजनीतिक कर्मभूमि।

प्रयागराज के गंगापार इलाके में भी आई लव मोहम्मद का पोस्टर चिंगारी लगाई जरूर गई पर चिंगारी के सुलगने के पहले पुलिस ने बुझा दी। एक शख्स की गिरफ्तारी पर सपा के एमएलसी मान बहादुर सिंह, विधायकों समेत पार्टी पदाधिकारियों का जत्था पुलिस मुख्यालय प्रयागराज के गेट पर ही धरना शुरू कर दिया परन्तु पुलिस अफसरों ने उन्हें उनकी भाषा में समझाकर वापस लौटा दिया।

बरेली में कुछ समय के लिए शैतानी ताकतें अपने नाकाम कोशिश में कामयाब दिखती नजर आईं। जुमे की नमाज पढ़ने आई मुस्लिम समुदाय की भीड़ को सड़क पर प्रदर्शन करने के लिए बहकाने में कुछ उन्मादी तत्व सक्रिय हो गए। कोतवाली क्षेत्र के बिहारीपुर पुलिस चौकी इलाके में बच्चों और महिलाओं के हाथ में ईंट पत्थर देकर हिंसक प्रदर्शन करने लगे। हजारों की भीड़ अराजक होने लगी। 'नारा - तकदीर' लगाते हुए पोस्टर लहराए गए। देखते ही देखते आगजनी और तोड़फोड़ के अलावा पथराव भी शुरू हो गए। पुलिस ने लाठियां भांजकर हालात काबू में कर लिया। बरेली शहर दंगे में झुलसने से बच गया। कहना गलत न होगा कि कानपुर में आई लव मोहम्मद के पोस्टर की जो चिंगारी निकली, उसका घातक असर बरेली में साफ दिखा। बरेली में दंगा की नौबत तक आ गई।

साभार : सोशल मीडिया

गनीमत रही कि समय रहते असलियत सामने आ गई व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सख्ती के साथ साजिश को कुचलने में कामयाब रहे। काबिले तारीफ रहा प्रशासन का समय के भीतर सूझ बूझ से भरा कड़ा एक्शन।

पोस्टर पर लव इजहार तो बहाना, उद्देश्य था दंगा तबाही मचाना

सवाल उठता है कि बरेली में ऐसी नौबत क्यों आई ? इसके पीछे मौलाना तौकीर रजा की वो अपील बताई जा रही है जिसका ऐलान उन्होंने किया था। मौलाना तौकीर रजा ने जुमे की नमाज के बाद विरोध मार्च और प्रदर्शन का ऐलान कर रखा था। मस्जिद में नमाज के बाद बच्चों और महिलाओं के हाथ में आई लव मोहम्मद के पोस्टर थमाकर नारेबाजी शुरू करा दी गई। भीड़ बढ़ती गई और हालात बेकाबू होने लगे। 'बच्चा बच्चा नबी की शान में कुर्बान' जैसे नारे लगाए गए। तोड़फोड़ और आगजनी शुरू हो गई। पुलिस के रोकने पर पथराव होने लगा। बवाल बढ़ता देख पुलिस ने लाठियां भांजकर हालात काबू में किए। आईजी पुलिस अजय साहनी ने बताया कि विरोध प्रदर्शन में कुछ लोग बाहर से आए और बवाल की शुरूआत की। उन्होंने बताया कि इसकी फोटो और वीडियोग्राफी कराई गई है, बवाल का जो भी 'ट्रिगर प्वाइंट' होगा, जांच में सामने आ जाएगा।

सवाल उठना लाजिमी है

कानपुर से शुरू पोस्टर युद्ध का देखते ही देखते कई राज्यों और जिलों में फैल जाना किसी बड़ी साजिश का तो हिस्सा नहीं ? जांच टीम के एक्सपर्ट इस नतीजे पर भी पहुंचे हैं कि जिन पोस्टरों का उपयोग किया गया उसके कलर, साइज, ले आउट से लेकर लोगो तक हुबहू एक तरह। ज्यादातर समानताएं भी मिल रही हैं। महिलाएं और बच्चों का ही पत्थर फेंकने का तरीका जेहाद का हिस्सा नजर आ रहा है। समाज शास्त्री और विशेषज्ञ इसे अमनचैन बिगाड़ने की साजिश का हिस्सा मानते हैं।

क्रिकेट खेलते बच्चों की गेंद मोहम्मद साहब के पोस्टर पर लग जाने के बाद पहले महिलाओं और बच्चों के बीच कहासुनी हुई फिर इस बात को लेकर विवाद हो गया कि

बगैर अनुमति के दीवार पर पोस्टर बैनर क्यों लगा दिया? इसके बाद जगह जगह आई लव मोहम्मद के पोस्टर को हाथ में लेकर विरोध प्रदर्शन और उसकी आड़ में हिंसा फैलाने की शुरूआत हो गई। कार और वाहनों पर आई लव मोहम्मद के पोस्टर लगाकर माहौल बिगाड़ने की कोशिश की गई। चाणक्य विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव रवि शंकर पाण्डेय और भाजपा नेता मनोज द्विवेदी कहते हैं कि इस्लाम में बुत परस्ती यानी मूर्ति पूजा की कड़ाई के साथ मनाही है, इस्लाम में इसे हराम घोषित किया गया है। पैगंबर साहब की तस्वीर या चित्र पर मूर्ति बनाने पर हमेशा से पाबंदी भी रही है। सवाल उठाते हैं कि जब पैगंबर की तस्वीर बनाना ही गलत है तो मोहम्मद साहब का पोस्टर, नारे और प्रेम का खुलेआम प्रदर्शन कितना जायज है ?

कहीं ये राजनीतिक गोलबंदी तो नहीं

विधानसभा चुनाव 2027 को सन्निकट देखते हुए हर दल चुनाव की तैयारी में जुटे हुए हैं। तरह-तरह से लोगों को गोलबंद करके अपने पक्ष में करने की कोशिश में राजनीतिक दल जुट गए हैं। सत्तादल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और खासकर उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ को लेकर सीना ठोंककर एक बात तो बड़ी शान के साथ कहता ही है कि कभी दंगा फसाद से झुलसा रहने वाला यूपी दंगा फसाद से मुक्त हो चुका है।

जैसा कि चर्चा छिड़ने पर भाजपा के प्रयागराज गंगापार जिला मंत्री अमरजीत कुशवाहा, उत्तर प्रदेश टैक्स बार एसोसिएशन के कार्यकारिणी सदस्य एन के अरोड़ा, अपर शासकीय अधिवक्ता नरेंद्र कुमार श्रीवास्तव, स्थाई अधिवक्ता शिव प्रकाश, मुंशी एसोसिएशन के अवधेश सिंह कहते भी हैं कि डबल इंजन की सरकार में जीरो टॉलरेंस अपराध, संगठित अपराधों पर अंकुश, अमनचैन के साथ विकास की गति तेज है, विपक्ष के पास कोई टिकाऊ चुनावी मुद्दा नहीं मिल रहा है। पोस्टर वॉर के जरिए कहीं ये राजनीतिक गोलबंदी तो नहीं है? सत्ता विरोधी नैरेटिव का ताना बाना बुनने की साजिश तो नहीं? बहरहाल, वास्तविकता क्या है, ये तो भविष्य के गर्भ में है, जांच के बाद ही सामने आएगा पर ये काबिले तारीफ है कि सूझबूझ से अमन चैन बच गया।

बिछ गई बिसात

किसकी शह किसको मात

डॉ. चन्द्रकांत भट्ट 'डिप्टी'

विश्व में सबसे पहले बिहार की धरती से ही लोकतांत्रिक विचारधारा की परिकल्पना का उदय हुआ था। वैशाली गणराज्य की जनतांत्रिक सोच व शासन व्यवस्था ने तब दुनिया की सभी शासन व्यवस्थाओं को अपनी ओर आकर्षित कर पुष्पित पल्लवित किया। बाद के वर्षों में विश्व के अधिकांश देशों ने शासन के लोकतांत्रिक स्वरूप को अपनाया और जनता के अधिकार व विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। लोकतंत्र की यह यात्रा अनवरत जारी है।

देश के अन्य राज्यों से इतर बिहार विधानसभा चुनाव सदैव से दिलचस्प रहा है। जातियों के खेमे में बंटी बिहार की राजनीति और मतदाता आमतौर पर अपने-अपने रहनुमाओं की तरफ गोलबंद होते रहे हैं। लगभग, हर चुनाव जातीय संघर्ष का साक्षी रहा। अगड़े-पिछड़े का खुला खेल फर्रूखाबादी सतह पर दिखाई पड़ता है। हालांकि, समय के साथ व्यवस्था बदलने से इस परिदृश्य में थोड़ा-बहुत बदलाव भी आया है।

भविष्य में होने वाले नफा-नुकसान का ऑकलन कर कुछ बौद्धिक राजनेताओं ने बिहार के जातीय समीकरणों और वर्ग संघर्षों के दौर से निकाल कर विकास के पहिये को गतिमान करने का भगीरथ प्रयास करे बिहार को जंगलराज से बाहर निकाला। विकास की बयार

साभार : सोशल मीडिया

बहाकर कथनी और करनी में समरूपता स्थापित कर जनता का भरोसा और विश्वास जीतने में कामयाबी पाई। बदले में जनता ने भी 'सुशासन बाबू','विकास कुमार'आदि विशेषणों से अलंकृत किया। वहीं, इनके स्वभाव के अनुरूप 'पलटी कुमार' से भी विभूषित किया गया।

पूर्व के सभी आम चुनावों से अलग इस बार का चुनाव और अधिक दिलचस्प होने की संभावना है, क्योंकि मुफ्त की रेवड़ियों और लॉलीपॉप से तरबतर लोक लुभावन वादों और उस पर आम आदमी का क्रमशः बढ़ता झुकाव व रूझान चुनावी गणित को डगमगाने का माद्दा रखता है। सूबे के मुखिया नीतीश कुमार कभी मुफ्त और फ्री सुविधाएं देने के सख्त विरोधी रहे। वे ऐसी बातों को लोकतंत्र के लिए आत्मघाती, अकर्मण्यता, कामचोरी और समाज को गर्त में धकेलने जैसे बयानों से विभूषित करते नहीं थकते थे, लेकिन बदलते चुनावी समीकरणों के दौर में राजनीतिक शुचिता को दरकिनार कर खुद मुफ्त वाली चौसर पर पासे पर पासे फेंके जा रहे हैं।

चाहे मुफ्त की 125 यूनिट बिजली देने का हो या पेंशन राशि बढ़ाकर लेमनचूस देने का, चाहे नई भर्तियों की घोषणा के बाद आशा, ममता सरीखे सभी विभागों में नियोजितों के मानदेय में बढ़ोतरी का, अपने फरमानों व अजीबोगरीब बयानों, हरकतों से हास्यास्पद स्थिति का सामना कर फजीहत करा चुके 'पलटी कुमार' अब भाजपा का साथ नहीं छोड़ने की कसम तो खा रहे हैं, लेकिन इनका कोई भरोसा नहीं है।

यह बात सभी दलों के वरिष्ठ नेता अच्छी तरह समझ रहे हैं। प्रधानमंत्री बनने के चक्कर में डोमिसाइल नीति हटाकर लगभग साठ-सत्तर हजार अन्य राज्यों के लोगों को बिहार में शिक्षक के पद पर बहाल कर, बेरोजगारी की मार झेल रहे सूबे के छात्रों का हकमारी कर काफी किरकिरी करा चुके हैं। इसका भी सीधा असर चुनावों पर जरूर पड़ेगा।

बिहार में चुनावी बिसात लगभग पूरी तरह से बिछ चुकी है, शह-मात का खेल जारी है। विभिन्न दलों के प्यादों को अपने-अपने खेमे में लाने की खींचातानी मची है। कालनेमि वाले रोल में सभी दलों के घाघ, घात पे घात लगाए बैठे हैं। सभी के अपने-अपने दावे हैं लेकिन इतना तो तय है कि नये-नये बने दल, जो अपनी राजनीतिक जमीन तलाश रहे हैं, ने राज्य के सभी प्रमुख दलों के पेशानियों पर बल तो ला ही दिया है। कभी चुनावी मेंटर, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बनाने की गारंटी देने वाले जनसुराज के मुखिया प्रशांत किशोर हों या तेजस्वी के मुख्यमंत्री बनने की राह के रोड़ा बनने वाले एआईएआईएम के चीफ ओवैसी हों।

पीके जहां सभी 243 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर गांव से लेकर शहरों तक बिहार बदलाव सभा का आयोजन कर चाचा-भतीजे के कुशासन से बदहाल बिहार को बाहर लाने की बात कह रहे हैं, लेकिन शायद उन्हें यह भान नहीं है कि बिहार का मिजाज दिल्ली वाला नहीं है।

प्रशांत किशोर, बिहार बदलाव सभाओं के माध्यम से युवाओं का पलायन रोकने, बेलगाम होते अपराध पर नियंत्रण और शराबबंदी को खत्म करने, शैक्षणिक सुधार जैसे लोक लुभावन मुद्दों का राग अलाप रहे हैं। वहीं, ओवैसी सीमांचल की सभी सीटों पर गहरी पकड़ बनाए हुए हैं। पिछले विधानसभा चुनावों में पांच सीटें जीतकर और 15 से 20 सीटों पर राजद कांग्रेस गठबंधन को हराने में एआईएमआईएम ने अहम भूमिका निभाई थी, जिसकी बदौलत ही बिहार में राजद की सरकार नहीं बन सकी और न ही तेजस्वी का सीएम बनने वाला सपना साकार हो पाया। इस बार ओवैसी बहुजन समाज पार्टी जैसे दलों की ओर टकटकी लगाये हैं।

मध्यावधि चुनावों में लगभग हर सीट पर इंडिया और राजग गठबंधन के बीच मुकाबला इतना जोरदार रहा था कि जीत हार का आंकड़ा महज पांच से दस हजार वोटों का था। पीके की जनसुराज पार्टी यही अंतर वाला वोट अपने पाले में खींचती हुई दिखाई पड़ रही है। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि एमवाई समीकरण के कारण इंडिया गठबंधन का वोट बैंक दरकने व सेंधमारी से बच जाएगा, क्योंकि प्रशांत किशोर अगड़े समुदाय से आते हैं और उनके अधिकांश प्रत्याशी भी इसी समुदाय से होंगे। यदि कोई बड़ा उलटफेर नहीं हुआ तो राजग गठबंधन को नुकसान पहुंचना तय है। लोजपा प्रमुख चिराग भी नई भूमिका में नजर आने लगे हैं। शेष, छोटे-छोटे दल, दोनों प्रमुख दलों में अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जगह बनाने की जुगाड़ में भिड़े हैं।

बदले बिहार में मुद्दे भी बदल गए हैं। जाति फैक्टर तो यहां से जाने वाली नहीं लेकिन इसके बावजूद इस बार के चुनाव में विकास बनाम अपराध, जातिगत जनगणना, लाल फीताशाही, नौकरियों में ढुलमुल नीति, बांग्लादेशी घुसपैठ, रोहिंग्या समस्या, भ्रष्टाचार, युवाओं का पलायन, विशेष राज्य का दर्जा, शराबबंदी और विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) जैसे महत्वपूर्ण ज्वलंत मुद्दे विशेष रूप से उछाले जाएंगे।

अब ऊंट चाहे जिस करवट बैठे, जनता कर्णधारों के समक्ष जनता की बेरोजगारी दूर करने, उनके लिए उद्योग धंधे, कल-कारखाने स्थापित करने और बिहार से युवाओं का पलायन रोकने की सबसे बड़ी चुनौती होगी। ऐसे सवाल भी बिहार की राजनीति की दशा और दिशा को तय करेंगे। नया मुखिया कौन होगा 14 नवंबर चुनावों के नतीजे तय करेंगे, लेकिन कयास लग रहे हैं कि इस बार सूबे की जनता को नया सीएम मिल सकता है।

संघ को समझने का सुनहरा अवसर है शताब्दी वर्ष

संगठित हिन्दू समाज का निर्माण ही संघ का ध्येय

डॉ. मुरार जी त्रिपाठी

प्रांत प्रचार प्रमुख, काशी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

'संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढ़े चलो भला हो जिसमें देश का वो काम सब किए चलो' इस ध्येय को लेकर चलते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका है। अपनी इस गौरव पूर्ण यात्रा में संघ ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। संघ को पीछे धकेलने के कई बार प्रयत्न हुए। मनमाने आरोप लगाकर संघ पर कई बार प्रतिबंध लगाए गए लेकिन अपनी प्रतिबद्धता एवं अनोखी कार्यशैली से संघ ने सभी बाधाओं को पार कर लिया। विघ्न बाधाओं की दहकती ज्वाला में संघ कुंदन की तरह निखर कर पहले से भी सशक्त रूप में उभर कर समाज के सामने आया। नेतृत्व पर अटल विश्वास बनाए हुए स्वयंसेवकों ने आपातकाल के दमनचक्र को पूरी बहादुरी के साथ झेला।

इसके फलस्वरूप लोकतंत्र को विफल कर अधिनायक वादी प्रवृत्ति को पोषित करने वालों के सपने चकनाचूर हो गए। संघ के वास्तविक स्वरूप के बारे मे संघ विरोधी शक्तियों ने समाज में तमाम तरह की भ्रांतियां फैलाईं। संघ को फासिस्ट व सांप्रदायिक कहा गया। संघ इन सबकी परवाह किए बिना अपने मार्ग पर चलता रहा और उसके वास्तविक स्वरूप की जानकारी काफी हद तक अब समाज को हो गई है। शताब्दी वर्ष में देशवासियों को संघ के बारे में और भी जानने समझने का अवसर मिलेगा। संघ को समझने का यह एक स्वर्णिम अवसर है।

संघ विरोधी भी अब संघ के प्रशंसक

संघ के समानांतर स्थापित हुए कई संगठन या तो कालकवलित हो गए या टुकड़े-टुकड़े होकर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई दे रहे हैं। संघ की यह 100 वर्ष की यात्रा समाज वैज्ञानिकों के चिंतन का विषय बनी हुई है। संघ की संगठन शक्ति और उसकी कार्यशैली पर देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनुसंधान चल रहे हैं।

स्वयंसेवकों की निःस्वार्थ देश सेवा एवं समाज बंधुओ की संकट के समय सहायता हेतु अग्रणी भूमिका में दिखाई देने के कारण वैचारिक रूप से संघ का विरोध करने वालों को भी अपनी सोच बदलने के लिए विवश होना पड़ रहा है। हाल ही में कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री एवं वहां के एक विधायक ने भरे सदन मे संघ की प्रार्थना सुना कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। साथ ही यह भी कहा कि संघ की प्रार्थना में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। इस तरह के कथन संघ के प्रति बदलते हुए दृष्टिकोण के परिचायक हैं। मूलतः संघ का कार्य समाज में वैचारिक जागृति लाना, देश भक्ति का भाव जगाना और व्यक्ति निर्माण है।

अपने इसी उद्देश्य को लेकर संघ 1925 से लगातार कार्य करता चला आ रहा है। संघ का शक्ति केन्द्र उसकी शाखाएं हैं। देव दुर्लभ कार्यकताओं का निर्माण इन्हीं शाखाओ पर होता है। 100 वर्षों की इस लंबी यात्रा में संघ के कार्य क्षेत्र में कुछ और भी नए-नए विषय जुड़े हैं। व्यक्ति निर्माण के साथ ही साथ संघ ने सेवा के क्षेत्र में विशेष कार्य प्रारंभ किए हैं। इस समय पूरे देश में एक लाख से अधिक सेवा कार्य संचालित किये जा रहे हैं। संघ को अपने कार्य विस्तार के लिए जबरदस्त प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा है। संघ की यह यात्रा हजारों बलिदानों से सजी है। जब भी भारत माता ने पुकारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की आहुति देने में संकोच नहीं किया। केरल से लेकर कश्मीर पश्चिम बंगाल तथा पूर्वोत्तर भारत में अनेकों स्वयंसेवकों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ केवल एक संगठन मात्र नहीं बल्कि यह एक जीवन दर्शन है, जहां राष्ट्र सर्वोपरि और सेवा साधना है देश विभाजन के समय दंगों में हिंदू समाज की रक्षा करते हुए अनेक स्वयंसेवकों को भी अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा है देश में जब भी जहां भी प्राकृतिक आपदाएं आई हैं आवश्यकता के अनुसार संघ के स्वयंसेवक वहां निस्वार्थ भाव से पहुंचकर सेवा कार्य में अपने को समर्पित किए हैं। 100 वर्षों की इस यात्रा में गो रक्षा, संस्कृति संरक्षण और सामाजिक समरसता के लिए संघर्ष करते हुए हजारों स्वयंसेवकों ने अपने जीवन का बलिदान किया है। इन बलिदानी स्वयंसेवकों का नाम इतिहास की किताबों में भले ना हो लेकिन इनका त्याग हर राष्ट्रभक्त के हृदय में अमर है। संघशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के बारे में पिछले तीन वर्षों से लगातार मंथन चल रहा था। इन तीन वर्षों मे 200 से अधिक सुझाव आए। सभी सुझावों पर गहराई से विचार विमर्श करने के बाद सात प्रमुख कार्यक्रम निर्धारित किए गए। ये कार्यक्रम अक्टूबर 2025 की विजयदशमी से प्रारंभ होकर पूरे वर्ष तक चलते रहेंगे।

कार्यक्रमों का उद्देश्य

सर्वस्पर्शी व सर्वव्यापी कार्य के स्वरूप का दिग्दर्शन कराना, कार्य की गुणात्मकता मे वृद्धि सुप्तशक्ति एवं सज्जन शक्ति का जागरण, शाखा समाज परिवर्तन का केंद्र बने तथा समाज मे वैचारिक विमर्श खड़ा हो। इन कार्यक्रमों को छोड़कर अन्य कार्यक्रम भी स्थानीय स्तर पर संगठन के पदाधिकारियों की सहमति से संचालित किये जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ शाखाओं ने शताब्दी वर्ष में 100स्वयं सेवकों की शाखा चलाने का निश्चय किया है। कुल मिला कर शताब्दी वर्ष मे सभी प्रकार के स्वयंसेवको को सक्रिय करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है इसमें नित्य शक्ति सुप्त शक्ति दोनों ही प्रकार के स्वयंसेवक अपना पूर्ण योगदान संघ के कार्यक्रमों में प्रदान करेंगे। जो स्वयंसेवक प्रतिदिन शाखाओ में आते हैं वे नित्य शक्ति के अंतर्गत है तथा जिनकी दैनिक सक्रियता नहीं रहती ऐसे स्वयंसेवक सुप्त शक्ति के अंतर्गत परिगणित किए गए हैं।

कार्यक्रमों की योजना

1- विजयदशमी उत्सव व पथ संचलन 1 से 12 अक्टूबर 2025
2- घर घर संपर्क अभियान 5 से 30 नवंबर2025
3- मंडल,बस्ती हिंदू सम्मेलन दिसंबर 2025
4- युवाओं के कार्यक्रम जनवरी 2026
5- सामाजिक सद्भाव बैठक 1 से 28फरवरी 2026
6- प्रमुख नागरिक संगोष्ठी 1 से 31 अगस्त 2026
7- सर्वत्र शाखा 25 सितंबर से अक्टूबर 2026

प्रतिनिधि सभा का संकल्प

शताब्दी वर्ष को लेकर अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में पारित संकल्प इसके मूल उद्देश्यों पर गहराई से प्रकाश डालता है। यह संकल्प सभी स्वयंसेवकों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में काम करेगा। संकल्प में कहा गया है कि अनंत काल से ही हिंदू समाज एक प्रदीर्घ और अविस्मरणीय यात्रा में साधना रत रहा है जिसका उद्देश्य मानव एकता और विश्व कल्याण है। तेजस्वी मातृशक्ति सहित संतों, धमार्चार्यो तथा महापुरुषों के आशीर्वाद एवं कृतित्व के कारण हमारा राष्ट्र कई प्रकार के उतार चढ़ाव के उपरांत भी निरंतर आगे बढ़ रहा है। काल के प्रवाह में राष्ट्र जीवन मे आए अनेक दोषों को दूर कर एक संगठित चरित्र संपन्न और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत को परम वैभव तक ले जाने हेतु परम पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने सन 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य प्रारंभ किया।

संघ कार्य का बीजारोपण करते हुए डॉ. हेडगेवार ने दैनिक शाखा के रूप में व्यक्ति निर्माण की एक अनूठी कार्य पद्धति विकसित की जो हमारी सनातन परंपराओं व मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण का निःस्वार्थ तप बन गया। उनके जीवनकाल में ही इस कार्य का एक राष्ट्रव्यापी स्वरूप विकसित हो गया। द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गुरु जी के दूरदर्शी नेतृत्व में राष्ट्रीय जीवन के विविध क्षेत्रों में शाश्वत चिंतन के प्रकाश में कॉल सुसंगत युगानुकूल रचनाओं के निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

100 वर्ष की इस यात्रा में संघ ने दैनिक शाखा द्वारा अर्जित संस्कारों से समाज का अटूट विश्वास और स्नेह प्राप्त किया। इस कालखंड में संघ के स्वयंसेवकों ने प्रेम और आत्मीयता के बल पर मान अपमान और राग द्वेष से ऊपर उठकर सबको साथ लेकर चलने का प्रयास किया। शताब्दी वर्ष के अवसर पर हम सब का कर्तव्य है कि पूज्य संतो और समाज की सज्जन शक्ति,जिनका आशीर्वाद और सहयोग हर परिस्थिति में हमारा संबल बना, जीवन समर्पित करने वाले निस्वार्थ कार्यकर्ता व मौन साधना में रत स्वयंसेवक परिवारों का स्मरण करें। अपनी प्राचीन संस्कृति व समृद्ध परंपराओं के चलते सौहार्द्रपूर्ण विश्व का निर्माण करने के लिए भारत के पास अनुभव जनित ज्ञान उपलब्ध है। हमारा चिंतन विभेदकारी और आत्मघाती प्रवृत्तियों से मनुष्य को सुरक्षित रखते हुए चराचर जगत में एक तत्व की भावना तथा शांति सुनिश्चित करना है। संघ का यह मानना है कि धर्म के अधिष्ठान पर आत्मविश्वास से परिपूर्ण संगठित सामूहिक जीवन के आधार पर ही हिंदू समाज अपने वैश्विक दायित्व का निर्वाह प्रभावी रूप से कर सकेगा। हमारा कर्तव्य है कि सभी प्रकार के भेद को नकारने वाला समरसता युक्त आचरण, पर्यावरण मूलक जीवन शैली पर आधारित मूल्याधिष्ठित परिवार, स्वबोध से ओतप्रोत व नागरिक कर्तव्यों के लिए प्रतिबद्ध समाज का चित्र खड़ा करने के लिए हम सब संकल्प करें। हम इसके आधार पर समाज के सब प्रश्नों का समाधान, चुनौतियो का उत्तर देते हुए भौतिक समृद्धि एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण समर्थ राष्ट्र जीवन खड़ा कर सकेगे।

पंच परिवर्तन का लक्ष्य

संघ ने शताब्दी वर्ष में मुख्यतः 5 विषयों को लेकर समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक जाने का लक्ष्य तय किया है, इन्हें ही पंच परिवर्तन कहा गया है। स्वयंसेवक इन विषयों पर प्रबोधन व प्रचार तक सीमित नहीं रहेंगे। पहले स्वयं के फिर परिवार के आचरण व्यवहार मे इस विषय को लाकर इन्हें अपना स्वभाव बनाएंगे। समाज का प्रत्येक व्यक्ति पांच परिवर्तन को जाने माने व अपने जीवन में अपनाये इस उद्देश्य को लेकर जन जागरण का कार्य करने की योजना बनाई गई है। सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी जीवन शैली और नागरिक अनुशासन को ही पंच परिवर्तन कहा गया है।

साभार : सोशल मीडिया

फुस्स हो गया कांग्रेस के 'युवराज' का एटम बम!

संजय कुमार

आखिरकार, कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी का एटम बम 'फुस्स' हो गया। शुरूआती दिनों में देश से लेकर विदेश तक करोड़ों लोगों को बेसब्री से इंतजार था कि राहुल गांधी कोई बड़ा धमाका करेंगे। कथित वोट चोरी के मामले में राहुल गांधी जिस तरह से उछल-कूद कर रहे थे, निश्चित ही उनके पास कोई बड़ा क्लू हाथ लगा होगा, जल्दी ही वो कोई बड़ा धमाका करने वाले हैं। पर, इस ड्रामे का अंत निराश करने वाला ही निकला। पूरा मामला ही हास्यास्पद रहा। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता सुधांशु त्रिवेदी तंज कसते हैं- राहुल गांधी का एटम बम तो सुतली बम भी न निकला। वरिष्ठ पत्रकार अनूप शुक्ला कहते हैं कि खोदा पहाड़ और मरी चुहियां भी न निकली। कथित वोट चोरी के मामले को लेकर बेहद आक्रामक

चुनाव आयोग ने गहरी आपत्ति जताई

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बकायदा प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस बात को कई बार स्पष्ट किया कि कथित वोट चोरी का मुद्दा पूरी तरह आधारहीन और झूठ है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि कुछ लोग बिहार में एसआईआर ड्राइव को लेकर गलतफहमियां फैला रहे हैं और जनता को गुमराह कर रहे हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में जिस तरीके से तस्वीरें सार्वजनिक की जा रही हैं वो भी सुप्रीम कोर्ट के पहले दिए गए आदेश के अनुसार निजता का उल्लंघन भी है। चुनाव आयोग को यहां तक कहना पड़ा कि चुनाव आयोग के कंधे पर बंदूक रखकर राजनीति न करें। चुनाव आयोग एक स्वतंत्र और निष्पक्ष एजेंसी है। इसकी गरिमा को बरकरार रखें।

दिखने वाले कांग्रेस के प्रमुख नेता राहुल गांधी फिलहाल ठंडे-ठंडे नजर आ रहे हैं। जानकारों का तो यहां तक कहना है कि राहुल गांधी के एटम बम का बैकफायर कर कांग्रेस को ही नुकसान पहुंचा सकता है। आशंका इस बात की है कि बिहार के चुनाव में इसका खराब असर पड़ सकता है। गौरतलब है कि विपक्षी गठबंधन के सहयोगी दल इस मुद्दे पर कांग्रेस प्रमुख राहुल गांधी के साथ नहीं दिखे।

राहुल गांधी लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष हैं। बिहार विधानसभा चुनाव में कथित वोट चोरी का हौव्वा खड़ा कर न सिर्फ बेहद आक्रामक दशा में देखे गए, बल्कि हंगामा खड़ा करने की पूरी कोशिश की। चुनाव आयोग की स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) प्रक्रिया से जोड़ते हुए संस्थागत तंत्र के जरिए वोट चोरी करार दे रहे थे। राहुल गांधी लगातार भारतीय जनता पार्टी और चुनाव आयोग को न सिर्फ निशाने पर लेते देखे गए बल्कि इस दौरान बेहद आक्रामक भी नजर आए। यहां तक कि कुछ दिनों पहले बकायदा प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल गांधी ने दावा किया कि कर्नाटक की विधानसभा सीट से वोटरों के नाम अवैध तरीके से हटाए गए और महाराष्ट्र की एक विधानसभा सीट पर कई लोगों के नाम गलत तरीके से जोड़े गए।

राहुल गांधी ने 7 अगस्त, 2025 की प्रेस कॉन्फ्रेंस में वोट चोरी का आरोप लगाते हुए न सिर्फ चुनाव आयोग को कठघरे में खड़ा कर दिया बल्कि सत्तारूढ़ दल भाजपा के साथ सांठगांठ करने तक का इल्जाम मढ़ दिया। हालांकि, चुनाव आयोग ने सिरे से इस आरोप को खारिज कर दिया। बावजूद इन सबके राहुल गांधी वोट चोरी के मुद्दे को लेकर बिहार के चुनाव में वोटर अधिकार यात्रा निकालते रहे।

साभार : सोशल मीडिया

राहुल गांधी के इस रवैए पर चारों तरफ प्रतिक्रियाओं का दौर रहा। सवाल तो यहां तक उठाया जाने लगा कि भारत में चुनाव प्रक्रिया पर क्या अवाम का भरोसा डगमगाने की यह कोई चाल है या फिर इसके पीछे भी कोई गहरी राजनीतिक साजिश है। फिलहाल, राहुल गांधी के वोट अधिकार यात्रा को लेकर जिस तरह हंगामा मचा, वह केवल सियासी मजाक बनकर रह गया है।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता हमारा भारत

साभार : सोशल मीडिया

धनंजय चोपड़ा

'अमृतकाल में विकसित भारत की आधारशिला केवल और केवल स्वदेशी व आत्मनिर्भरता के माध्यम से ही तय हो सकती है। देश की सुरक्षा की तैयारियों से लेकर सेमीकंडक्टर चिप बनाने तक और खेती के लिए जरूरी उर्वरक बनाने से लेकर 10 लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था बनाने तक का लक्ष्य केवल और केवल देश की आत्मनिर्भरता से ही संभव होगा।

इसके लिए नवाचार, स्वदेशी तकनीक के विकास और युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास शुरू हो चुके हैं। स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से देशवासियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तकनीकी विकास में नवाचार, निर्माण और उपयोग में स्वदेशी की भावना और हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का मंत्र देकर यह तय कर दिया है कि इक्कीसवीं सदी के अगले 50 साल भारत के विकास के हैं और उससे कोई समझौता नहीं किया जाएगा।

वास्तव में स्वदेशी के भाव के साथ आत्मनिर्भरता प्राप्त करना ही सामाजिक विकास का सबसे अधिक मौलिक मंत्र है। किसी भी राष्ट्र और समाज के निरंतर गतिशील बने रहने की पहली शर्त होती है कि वह आत्मनिर्भर हो और नवप्रवर्तन के माध्यम से समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करता रहे। यही वजह रही कि भारत सरकार द्वारा 13 मई, 2020 को देश को हर मोर्चे पर आत्मनिर्भर बनाने के लिए अभियान शुरू किया गया। यह वह समय था, जब भारत सहित पूरी दुनिया कोरोना महामारी से जूझ रही थी। हमारे ही देश के लाखों-करोड़ों लोगों के समक्ष जीवनयापन का संकट पैदा हो गया था।

पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था डांवाडोल हो रही थी। ऐसे में बहुत जरूरी था कि अपने लोगों की हिम्मत और देश व समाज की गतिशीलता बनाए रखी जाए। इसी बात को ध्यान में रखकर यह अभियान सामने आया। भारत सरकार ने तब इस अभियान को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से 20 लाख करोड़ रुपये के आर्थिक पैकेज की घोषणा की थी। आज इस दिशा में निरंतर नये-नये कदम उठाए जा रहे हैं। तय है कि इस अभियान का मूल उद्देश्य देश को हर मायने में स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना है।

भारत सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के 5 स्तंभ निर्धारित किए गए हैं, जिनमें अर्थव्यवस्था, अवसंरचना यानी बुनियादी ढांचा, तर्कसंगत प्रणाली, जीवंत जनसांख्यिकी और मांग व उसकी आपूर्ति को शामिल किया गया है। इसे, इस तरह भी समझा जा सकता है कि यहां ऐसी अर्थव्यवस्था चाहिए, जो मात्रा में उछाल, वृद्धिशील परिवर्तन नहीं होने देने में मदद करे, अवसंरचना वह, जो आधुनिक भारत का प्रतिनिधित्व करती हो, प्रणाली यानी कि प्रौद्योगिकी सक्षम प्रणाली, जीवंत जनसांख्यिकी से मतलब यह कि सबसे बड़ा लोकतंत्र और इसकी जीवंत जनसांख्यिकी तथा मांग व आपूर्ति का अर्थ है कि मांग और आपूर्ति को ध्यान में रखकर उत्पादन की शक्ति का पूर्ण उपयोग करना।

इससे जिन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में योजना का लाभ होगा, उनमें कृषि और आपूर्ति श्रृंखला और प्रणाली, तर्कसंगत कर प्रणाली, इन्फ्रास्ट्रक्चर का सुधार, सक्षम मानव संसाधन, स्टार्टअप्स और स्माल-स्केल यूनिट्स को प्रोत्साहित करने के लिए आर्थिक स्थिति, अच्छ निवेश के अवसर और मेक इन इंडिया मिशन शामिल हैं।

आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को साकार करने के अभियान में जिन मुख्य लक्ष्यों को

शामिल किया गया है उनमें भारत की आधारभूत संरचना की प्रगति और उसके मील के पत्थर बनने का उत्सव मनाना और यह सुनिश्चित करना कि यह कैसे विकास और आत्मानिर्भरता को बढ़ावा दे सकता है, मुख्य रूप से शामिल है। आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल अभिगम्यता यानी डिजिटल दुनिया तक लोगों की पहुंच को बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया और देश में लगातार बढ़ रही डिजिटल अभिगम्यता इस बात को प्रमाणित भी करती है कि डिजिटल एक्सेस कैसे आत्मनिर्भरता को सक्षम बना रहा है।

इसी क्रम में युवाओं में उद्यमेशीलता की मानसिकता को विकसित करने के लिए कार्यक्रम, समूह आधारित शिक्षा और परामर्श के अवसर, प्रतियोगिताएं, सकारात्मक प्रतिस्पर्धा और इनसे जुड़ी हुई सार्थक गतिविधियों आदि को महत्व दिया जा रहा है। वैश्विक विकास और प्रगति में योगदान देने वाले भारत के अभिनव स्टार्टअप को सामने लाने और उन्हें लाखों युवाओं का प्रेरणा के स्रोत बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यही वजह है कि सक्षम मानव संसाधन के विकास को लेकर नित नई-नई पहल की जा रही हैं। नई शिक्षा नीति में कौशल विकास और मानव संसाधन का प्रशिक्षण को इस तरह शामिल किया गया है कि युवाओं को रोजगर के नये-नये विकल्प मिल सकें।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चौतरफा तैयारी दिख रही है और जिनपर बहुत तेजी से अमल किया जाना भी शुरू हो चुका है। इसे समझने के लिए 'एक जिला एक उत्पाद' (ओडीओपी) की योजना का उदाहरण लिया जा सकता है। योजना के शुरूआती दिनों में ही इस पहल ने देश भर के 761 जिलों से कुल 1102 उत्पादों की पहचान करके उन्हें आगे बढ़ाने का काम शुरू कर दिया है। इस पहल के माध्यम से भारत में आत्मनिर्भर भारत अभियान के कुटीर उद्योग, गृह उद्योग, लघु उद्योग, एमएस एमई, मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग के लोगों को लाभ और राहतें उपलब्ध करायी गई हैं। यही नहीं इस पहल में स्थानीय कारीगरों, बुनकरों, निमार्ताओं आदि के लिए क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए जैविक प्रमाणीकरण, डिजाइन विकास आदि पर क्षमता निर्माण कार्यशालाएं आयोजित कर रही है। इसी तरह की दूसरी योजना है 'मेक इन इंडिया'। भारत सरकार ने वर्ष 2014 में ही निवेश को बढ़ावा देने, नवाचार को बढ़ावा देने, कौशल विकास को बढ़ाने, बौद्धिक संपदा की रक्षा करने और सर्वोत्तम श्रेणी के विनिर्माण बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए 'मेक इन इंडिया' अभियान शुरू किया था। यह कहने में गुरेज नहीं होना चाहिए कि मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत, भारत में कारोबार करने की आसानी पर केंद्रित अनेक उपाय किए गए। एकदम नए, आईटी-प्रेरित अनुप्रयोग और ट्रैकिंग प्रक्रियाएं अब फाइलों और लालफीताशाही की जगह ले रही हैं। नीति नियंताओं का मानना है कि आज भारत की विश्वसनीयता जितनी ठोस है, उतनी कभी नहीं थी। इसमें गति, ऊर्जा और आशावाद है, जो साफ दिखाई दे रही है। 'मेक इन इंडिया' निवेश और निर्यात की नई-नई खिड़कियां खोल रहा है।

आज जिन क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता दिखनी शुरू हो गई है, उनमें कृषि, रक्षा, ऊर्जा और परिवहन के क्षेत्र सबसे आगे हैं। यह क्या कम नहीं है कि आजादी के 79 वर्षों बाद हमारी आजादी के पर्व पर हमारे राष्ट्र ध्वज को देश में ही निर्मित तोपें ने सालामी दे रही हैं, हमारे अंतरिक्ष यान को लेकर देश में ही निर्मित रॉकेट लेकर उड़ान भर रहा है। जैव ईंधन के मामले में हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं। अब हमारी अपनी मिसाइलें हैं तो आर्टफीशियल इंटेलिजेंस की तकनीक के हमारे अपने नवाचारी प्रयोग। हम सेमीकंडक्टर चिप निर्माण करने लगे हैं तो हाइड्रोजन ईंधन का उपयोग बढ़ाने की दिशा में हम काम कर रहे हैं।

ऐसे अनिगन उदाहरण हैं जो यह तय करते हैं कि हम सधे कदमों से आत्मनिर्भरता के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। यह इसलिए की हम ही हैं, जो समग्रता और समावेशी नीतियों पर चलते हुए 'सबका साथ-सबका विकास- सबका विश्वास' और 'जय जवान-जय किसान, जय विज्ञान-जय अनुसंधान' जैसे नारे देने और उन पर समय रहते अमल करने की ताकत रखते हैं।

आत्मनिर्भर भारत की बात करने के साथ-साथ यह जानना जरूरी है कि हमारा समय विज्ञान व तकनीकी संचार में ऊफान का समय है। एक ऐसा समय, जो रोज-ब-रोज आर्ट फिशियल इंटेलिजेंस में नित नए करतब और कमाल दिखा रहा है। एक ऐसा समय जो हमें चिप-कम्युनिकेशन की दुनिया में कुलांचे भरने को तैयार कर रहा है। एक ऐसा समय भी, जो रोबोटिक्स

साभार : सोशल मीडिया

साभार : सोशल मीडिया

और ऑग्मेंटेड रियलिटी के नये-नये उपयोगों की फेहरिस्त लंबी करता जा कहा है। यह, यूं ही नहीं है कि हमारा देश सेमीकंडक्टर चिप निर्माण की दिशा में पहल कर चुका है। नतीजा यह है कि इस बदलते दौर में दुनिया के बहुतेरे देश इस समय में सामाजिक-आर्थिक विकास के अधिक से अधिक लाभ पाने लिए नये-नये अवसर तलाशने की होड़ में शामिल हो चुके हैं।

हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी का यह तीसरा दशक शोध और नवाचार की जुगलबंदी के साथ सामाजिक व आर्थिक विकास के नये फार्मूले तलाशने का दशक है। और, जब हम समग्र व समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ रहे हों तो हमारे लिए यह जानना जरूरी हो जाता है कि इसके लिए हमें शोधकताओं, नवाचारियों और प्रतिभागी नागरिकों के बीच की मजबूत पारस्परिक नातेदारी की जरूरत पड़ेगी। जाहिर है कि भारत की आत्मनिर्भरता के लिए हमें अपने यहां शोध, नवाचार और विज्ञान संचार की गुंजाइश को बढ़ाना होगा। पिछले दिनों भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन की स्थापना, इसी क्रम में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है।

वास्तव में भारत सरकार ने जिस राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन की स्थापना की है, उसका काम देश में उपयोगी शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देना, नये क्षेत्रों में शोध को प्रेरित करना, उपयोगी शोधकार्यों को उद्योग से जोड़ा, शोध व अनुसंधान की गुणवत्ता बनाए रखना और देश में शोध के लिए फंड की कमी न होने देना निर्धारित किया गया है। यह शोध फाउंडेशन देश में वैज्ञानिक अनुसंधान की उच्च स्तरीय रणनीतिक दिशा प्रदान करने की दिशा में शीर्ष निकाय की तरह काम करेगा।

हमें, यह जल्दी से जल्दी समझ लेना होगा कि हम तब तक आत्मनिर्भर होने के अंतिम लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकते, जब तक कि हम लोगों की तीन भूख शांत नहीं कर देते। दिमाग की भूख यानी अशिक्षा, पेट की भूख यानी भुखमरी और बचत की भूख यानी बेरोजगारी को समाप्त करना सबसे बड़ी चुनौती है। और, इसके लिए जरूरी है कि हम लगातार विज्ञान व तकनीकी संचार के माध्यम से अपने लोगों को समय के साथ चलने के लिए तैयार करते रहें।

हमें गर्व होना चाहिए कि आजादी के 79 वर्ष पूरे कर चुका अपना देश भारत अब अपने 100वें वर्ष की ओर बढ़ चुका है। भारत सरकार ने इस अवधि को अमृतकाल कहा है। टेक्नोलॉजी के बलबूते बदलती दुनिया और बदलते समय में यदि हमें वास्तविक अमृतकाल में अपने देश को ले जाना है तो हर हाल में आत्मनिर्भर होना ही पड़ेगा। आत्मनिर्भरता की परिभाषा में स्वतंत्रता, स्वराज, स्वजन, स्वावलंबन, स्वाभिमान, स्वनिर्भरता जैसे शब्दों का समावेश होना जरूरी होता है। भारत के परिपेक्ष्य में यह भी जरूरी है कि जब आत्मनिर्भरता की परिभाषा को अमल में लाया जाए तो उसमें हमारी संस्कृति, संस्कार, सरोकार को मुकम्मल जगह मिली हो। भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत का जो स्वप्न देखा है, उसमें स्वजनों की भागीदारी सुनिश्चित करने के साथ-साथ उनके स्वाभिमान और स्वावलंबन को जगह देते हुए स्वतंत्र स्वराज को और अधिक मजबूती प्रदान करने का लक्ष्य निहित है।

'आत्मनिर्भर भारत' बनाने की तरफ पुख्ता कदम बढ़ाने के लिए जन-भागीदारी सुनिश्चित करने का शपथ पत्र भी है, जिस पर अमल करने की शपथ अब तक लाखों भारतीय ले चुके हैं। इस शपथपत्र में जो कुछ कहा गया है, उसे दोहरा लेना हर भारतीय के लिए जरूरी है। इसमें कहा गया है कि- 'मैं खुद को भारतीयों की मेहनत से बने और भारत में बने उत्पादों को खरीदने और इस्तेमाल करने लिए प्रतिबद्ध करता/करती हूं। ...मैं भारतीय इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के इस्तेमाल की शपथ लेता/लेती हूं। ...मैं भारतीय सेल्फ केयर वस्तुओं के इस्तेमाल की शपथ लेता/लेती हूं। ...मैं भारतीय कपड़ों के इस्तेमाल की शपथ लेता/लेती हूं। ...मैं भारतीय कार्यालय एवं ऑफि स के उपयोग की वस्तुओं के इस्तेमाल की शपथ लेता/लेती हूं। ...मैं भारतीय रसोई की वस्तुओं के इस्तेमाल की शपथ लेता/लेती हूं। ...मैं अन्य भारत में बनी वस्तुओं के इस्तेमाल की शपथ लेता/लेती हूं। ...मैं अपने परिवार और दोस्तों को भारतीय उत्पादों को खरीदने और इस्तेमाल के लिए प्रेरित करूंगा/करुंगी'।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और लेखक हैं)

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जागरूक रहें स्वस्थ रहें

स्वस्थ जीवनशैली दवा से अधिक लाभकारी

दुनिया में एक बड़ी आबादी डायबिटीज से पीड़ित है। डायबिटीज को कई रोगों की जननी भी माना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार, एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाना एंटी डायबिटीज दवा मेटफार्मिन के उपयोग से अधिक प्रभावी है और इसके लाभ 20 वर्षों बाद भी बने रहते हैं।

1996 में शुरू किए गए यूएस डायबिटीज प्रिवेंशन प्रोग्राम में 22 राज्यों के 30 संस्थानों से 3,234 प्रीडायबिटीज वाले मरीजों को शामिल किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य मेटफार्मिन का उपयोग और स्वस्थ जीवनशैली में संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, और पर्याप्त नींद शामिल है के लाभों की तुलना करना था। संतुलित आहार में फल, सब्जियां, साबुत अनाज और कम वसा वाले प्रोटीन का सेवन व प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों, शर्करा युक्त पेय पदार्थों और अत्यधिक वसा वाले खाद्य पदार्थों से बचें।

यूएस के न्यू मैक्सिको विश्वविद्यालय के शोधकताओं ने पाया कि जीवनशैली में बदलाव करने से डायबिटीज के बढ़ने में 24 प्रतिशत की कमी आई, जबकि एंटी डायबिटीज दवा ने 17 प्रतिशत तक कम किया। ये निष्कर्ष द लैंसेट डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलाजी जर्नल में प्रकाशित हुए। टीम ने नोट किया कि दोनों दृष्टिकोणों मेटफार्मिन लेने व स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बीच के अंतर पहले कुछ वर्षों में देखे गए और ये स्थायी थे।

साभार : सोशल मीडिया

जीवनशैली में बदलाव ज्यादा प्रभावी

पहले तीन वर्षों के बाद जीवनशैली में बदलाव जैसे वजन कम करना और शारीरिक गतिविधि बढ़ाना टाइप दो डायबिटीज के मामलों में 58 प्रतिशत की कमी लाए, जबकि मेटफार्मिन के साथ यह कमी 31 प्रतिशत थी। न्यू मैक्सिको विश्वविद्यालय के स्कूल आफ मेडिसिन के प्रोफेसर एमेरिटस बल्लभ राज शाह ने कहा कि डाटा यह सुझाव देता है कि जो लोग डायबिटीज से प्रभावित नहीं हुए, वे 22 वर्षों बाद भी डायबिटीज से प्रभावित नहीं हुए। जीवनशैली में बदलाव समूह के प्रतिभागियों ने डायबिटीज के बिना अतिरिक्त 3.5 वर्ष बिताए, जबकि मेटफार्मिन समूह के प्रतिभागियों ने 2.5 वर्ष का अतिरिक्त लाभ उठाया।

शाह ने आगे कहा कि तीन वर्षों के भीतर (अध्ययन शुरू होने के बाद), उन्हें अध्ययन रोकना पड़ा क्योंकि जीवनशैली मेटफॉर्मिन से बेहतर थी। इसका मतलब है कि जीवनशैली जिस पर सभी भरोसा कर रहे हैं अधिक प्रभावी है। शोध लेखकों ने लिखा, फालोअप के दौरान प्लेसबो की तुलना में (इंटेंसिव लाइफस्टाइल इंटरवेंशन) समूह में डायबिटीज के घटने की दर 24 प्रतिशत कम हुई व मूल मेटफार्मिन समूह में यह 17% कम हुई। इसके परिणामस्वरूप 3.5 वर्ष और 2.5 वर्ष के बीच डायबिटीज फ्री सर्वाइवल में वृद्धि हुई।

संघ की पहली शाखा की कहानी

भूतिया घर 'मोहिते का बाड़ा' में गूंजा- नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे...

भास्कर मिश्र

साभार : सोशल मीडिया

अंधविश्वास और राष्ट्रनिर्माण का संगम

भारत की धरती रहस्यों से भरी हुई है। कहीं प्राचीन किलों और हवेलियों में लोककथाएं जीवित हैं, तो कहीं पुराने खंडहरों में डरावनी कहानियां लोगों को अपनी ओर खींचती हैं। महाराष्ट्र के पुणे शहर का मोहिते का बाड़ा भी ऐसा ही एक स्थान है, जो वर्षों से 'भूतों का अड्डा' कहकर बदनाम किया जाता रहा। लोग मानते थे कि यहां रात के अंधेरे में अजीबोगरीब आवाजें सुनाई देती हैं और यहां कोई साधारण व्यक्ति देर तक नहीं ठहर सकता। लेकिन, इतिहास की विडंबना देखिए कि जिस स्थान को लोग भूतों का घर मानकर दूर रहते थे, वही स्थान बाद में राष्ट्रवाद और संगठन निर्माण का केंद्र बन गया। यह कहानी है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा की, जो इस अंधविश्वासी वातावरण के बीच शुरू हुई जिसने वहां की परंपराओं और विश्वासों को ही बदल डाला।

मोहिते का बाड़ा-रहस्य और डर का केंद्र

पुणे शहर का यह इलाका ऐतिहासिक दृष्टि से काफी पुराना है। मोहिते परिवार कभी मराठा साम्राज्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। उनके वंशजों ने इस विशाल बाड़े (आवासीय परिसर) का निर्माण किया था। यह परिसर इतना बड़ा था कि इसमें दर्जनों परिवार रह सकते थे।

गुजरते समय के साथ यह बाड़ा सुनसान हो गया। पुरानी दीवारों में दरारें, टूटे हुए खिड़की-दरवाजे और अंधेरे गलियारे, यहां भय का वातावरण पैदा करते थे। स्थानीय लोगों का मानना था कि रात को यहां से अजीब आवाजें आती हैं। कभी बच्चों के रोने की तो कभी किसी के पैरों की आहट की। धीरे-धीरे इस स्थान की पहचान 'भूतिया बाड़ा' के रूप में होने लगी। कहा जाता था कि पेशवा काल में इस बाड़े में कई गुप्त कक्ष थे, जिनमें सेनापति लोग बैठकें करते थे।एक कथा के अनुसार, एक युद्ध में मारे गए सैनिकों की आत्माएं यहां भटकती हैं। कई बार लोगों ने दावा किया कि उन्होंने यहां सफेद कपड़े पहने अजीब आकृतियां देखी हैं। इन कहानियों के कारण लोग यहां से गुजरने से भी डरते थे। शाम होते ही यह पूरा इलाका वीरान हो जाता था।

संघ की स्थापना और नये प्रयोग की जरूरत

1925 में जब डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की, तब उनका मुख्य उद्देश्य था-राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और संगठन की भावना का विकास करना। शाखाओं के माध्यम से युवाओं को संगठित करने का कार्य तेजी से चल रहा था, लेकिन एक चुनौती थी -शाखा के लिए उपयुक्त स्थान

साभार : सोशल मीडिया

का मिलना। पुणे जैसे शहर में खुले मैदान की कमी थी। ऐसे में कई स्वयं सेवकों ने सुझाव दिया कि मोहिते का बाड़ा खाली पड़ा है और वहां शाखा लगाई जा सकती है। इस सुझाव से अधिकांश लोग सहमत नहीं थे। कारण साफ था-वह स्थान 'भूतिया' कहलाता था।

भय को चुनौती: पहली शाखा का आयोजन डॉ. हेडगेवार अंधविश्वास के विरोधी थे। उनका मानना था कि 'भूत-प्रेत नहीं होते, यह सब हमारे डर और अज्ञान का परिणाम है।' उन्होंने स्वयंसेवकों को प्रेरित किया कि यदि हमें समाज से डर और भ्रम को हटाना है, तो शुरूआत खुद से करनी होगी। एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि संघ की शाखा मोहिते के बाड़े में ही लगाई जाएगी। पहली शाखा के दिन कई स्वयंसेवक असमंजस में थे। कोई सोच रहा था कि अगर सच में यहां कुछ हुआ तो? कोई डर के कारण शाखा में देर से पहुंचा, लेकिन हेडगेवारजी का आत्मविश्वास अडिग था।

पहली शाखा का दृश्य

सुबह-सुबह सूरज की किरणें पुराने खंडहरों पर पड़ रही थीं। बाड़े के बीचोबीच झंडा गाड़ा गया। संगीत के ताल पर 'प्रार्थना' हुई और शाखा की गतिविधियां शुरू हुईं। शुरूआती दिनों में कुछ स्वयंसेवक डर के कारण इधर-उधर देखते रहते थे, लेकिन धीरे-धीरे उनका भय कम होने लगा।

हाथीखाना-शक्ति का प्रतीक

संघ की शाखा बढ़ने लगी और अधिक स्थान की आवश्यकता महसूस हुई। इसी दौरान हाथीखाना नामक स्थान का चयन किया गया। हाथीखाना ऐतिहासिक रूप से मराठा काल में हाथियों को रखने का स्थान था। यहां विशाल कमरे और मजबूत दीवारें थीं। लोगों का मानना था कि यह स्थान भी रहस्यमयी है। रात को यहां से हाथियों की चिंघाड़ सुनाई देती है। बावजूद इसके संघ ने इस स्थान को अपने राष्ट्रनिर्माण कार्य के लिए उपयोग करने का निर्णय लिया।

हाथीखाना में नियमित शाखाएं लगने लगीं

युवाओं को दंड, व्यायाम और खेलों के माध्यम से अनुशासन सिखाया जाने लगा। राष्ट्रभक्ति गीत और प्रार्थनाओं से वातावरण गूंजने लगा। धीरे-धीरे लोगों की धारणा बदलने लगी। जो स्थान कभी डर का प्रतीक था, वह अब साहस और संगठन का केंद्र बन गया। मोहिते का बाड़ा और हाथीखाना के आसपास के लोग जो पहले अंधविश्वास में जी रहे थे, अब उनके विचारों में बदलाव आया। भूत-प्रेत का डर खत्म हुआ और लोग अब रात को भी वहां जाने लगे। युवाओं में शाखा के माध्यम से युवाओं में देशभक्ति की भावना जागृत हुई। समाज के अलग-अलग वर्गों के लोग एक साथ शाखा में शामिल हुए। संघ ने आसपास के इलाके की सफाई और मरम्मत कराई, जिससे जगह का स्वरूप बदल गया।

अंधविश्वास से विश्वास तक की यात्रा

यह कहानी सिर्फ शाखा की स्थापना की नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण की भी है। जिस स्थान को लोग 'भूतों का घर' मानते थे, वह अब राष्ट्र के निर्माण का पवित्र स्थल बन गया।

'डॉ. हेडगेवार का संदेश'

'डर केवल मन में होता है। जब मनुष्य भय को त्यागकर संगठन और अनुशासन का मार्ग अपनाता है, तब अंधविश्वास स्वयं नष्ट हो जाता है।'

ऐतिहासिक महत्व और प्रेरणा

आज मोहिते का बाड़ा और हाथीखाना संघ के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान रखते हैं। इन स्थानों की यात्रा हर स्वयंसेवक के लिए प्रेरणादायी होती है। यहां यह देखा जा सकता है कि कैसे एक संगठन ने अंधविश्वास को चुनौती दी कैसे राष्ट्रनिर्माण के कार्य ने समाज की सोच को परिवर्तित किया। समाज में व्याप्त डर, अज्ञान और अंधविश्वास को केवल संगठन और सही नेतृत्व ही दूर कर सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने यह साबित किया कि राष्ट्रभक्ति और अनुशासन के मार्ग पर चलकर किसी भी स्थान का कायाकल्प किया जा सकता है। आज भी जब शाखा में स्वयंसेवक प्रार्थना करते हैं, तो उनकी आवाज मानो यह संदेश देती है -'यह भूमि अब भूतों का नहीं, बल्कि भारतमाता के सच्चे सपूतों का घर है।'

बीज से वटवृक्ष तक संघ एक सदी का जीवन दर्शन

शताब्दी का राष्ट्रीय गौरवः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का शताब्दी वर्ष 2025-2026

सूर्य प्रकाश त्रिपाठी

भारतीय समाज के इतिहास में ऐसे बहुत कम अवसर आते हैं, जो केवल एक संगठन की उपलब्धियों का उत्सव न होकर पूरे राष्ट्र की धड़कन बन जाते हैं। 2025 का वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के लिए ऐसा ही एक कालखंड है। विजयदशमी 1925 को डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित संघ विजयदशमी 2025 (दशहरा) शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यह उत्सव केवल अतीत को स्मरण करने का अवसर नहीं, बल्कि भविष्य के भारत की दिशा तय करने की भी घड़ी है। संघ अपने 100वें वर्ष को 'समर्पित सेवा, संवाद और सामाजिक नवजागरण' का अवसर मानते हुए व्यापक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

राष्ट्रवाद को प्रेरित करता संघः

अब से ठीक 100 बरस पहले साल 1925 में नागपुर की मिट्टी में बोया गया एक छोटा विचारझबीज आज विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है, जिसे हम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नाम से जानते हैं।

संस्कार निर्माण का लक्ष्यः

संघ की स्थापना से लेकर आज तक उसका मुख्य उद्देश्य मात्र संगठन खड़ा करना नहीं, बल्कि सजग और जिम्मेदार नागरिक गढ़ना भी रहा है। इस उद्देश्य ने देश को कई अमूल्य प्रतिभाएं भी दीं।

दैनिक शाखाएं और शाखा संस्कृतिः

रोजाना सुबह एक घंटे के अभ्यास और संवाद ने लाखों युवाओं को चरित्रवान और अनुशासित जीवन की ओर अग्रसर किया। इससे लोगों की दिनचर्या पर प्रभाव तो पड़ा ही, साथ ही सामाजिक सद्भावना का विकास हुआ।

सामाजिक सहभागिताः

आरंभिक दशकों से ही समाजसेवा, शिक्षा,ग्रामोन्नति व सांस्कृतिक उत्थान संघ की प्राथमिकताओं में शामिल रहा। करोड़ों कार्यकर्ता, हजारों संगठन, समाज के हर कोने में जीवंत शाखाएं, यात्रा की साक्षी हैं।

शताब्दी पर्व की रूपरेखाः

मार्च, 2025 में बेंगलुरु में आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधिसभा (एबीपीएस) ने संघ की आगामी रणनीति और शताब्दी वर्ष की दिशा स्पष्ट की। केंद्र में रहा 'पंच-परिवर्तन' का संकल्प - पांच स्तंभ जो आने वाले सौ वर्षों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

पंच-परिवर्तन के स्तंभः

साभार : सोशल मीडिया

सामाजिक समरसता-जातिवाद और विभाजन की दीवारें तोड़कर भाईचारा स्थापित करना।

पारिवारिक जागृति-परिवार में संस्कार, संवाद और जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित

करना। पर्यावरण चेतना-जीवन और प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए लोगों से आगे आने की अपील करना। स्वत्व-संकल्प (आत्मनिर्भरता)-आत्मभरोसा और नवाचार को प्रोत्साहन देना।

नागरिक कर्तव्य-लोकतांत्रिक चेतना और सामूहिक उत्तरदायित्व की जिम्मेदारी से अवगत कराना। यह चरणबद्ध योजना केवल संगठन के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण की व्यापक रणनीति के रूप में प्रस्तुत की गई है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (एबीपीएस) 2025: एक ऐतिहासिक पड़ाव

समयः 21-23 मार्च 2025, स्थानः बेंगलुरु। लगभग 1500 प्रतिनिधि, जिनमें संघ प्रमुख मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले उपस्थित रहे। इस ऐतिहासिक सभा में कई सामाजिक मुद्दों पर विस्तार से मंथन किया गया।

मुख्य निर्णय

पंच-परिवर्तन पर विस्तृत ब्लूप्रिंट।

आगामी शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा तय। अंतरराष्ट्रीय संवाद और विस्तार की रणनीति। सामाजिक समरसता पर बल और विदेशों में कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प। यह आयोजन संघ की 100 वर्षीय योजना की ठोस नींव के रूप में इतिहास में दर्ज हो गया। नई दिल्ली संगोष्ठी (सितंबर 2025): संघ के 100 बरस पर खास शताब्दी पर्व का सबसे चर्चित चरण बना दिल्ली का यह भव्य आयोजन, जिसने संघ को शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विमर्श के नए आयामों से जोड़ा।

उद्देश्य

समाज के विविध वर्गों-धार्मिक संत, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, कलाकार, खिलाड़ी और स्टार्टअप जगत-से संवाद। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की वैश्विक प्रस्तुति।

युवाओं में राष्ट्र-निर्माण के लिए नई ऊर्जा।

एक महत्त्वपूर्ण संदेश यह रहा कि संघ अब केवल सांस्कृतिक संगठन तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्रीय नवाचार और सामाजिक समावेशिता का वाहक है।

विजयदशमी 2025: 'उत्सव-2025' का शुभारंभ

दशहरा पर्व यानी 2 अक्टूबर, 2025 से इस उत्सव का शुभारंभ होगा। नागपुर समेत देशव्यापी स्तर पर संघ के शताब्दी पर्व का औपचारिक आगाज होगा। जिसके तहत पूरे देश में विभिन्न कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया जाएगा।

प्रमुख गतिविधियां

विशाल रैलियां और सभाएं-समाज को जागरूक करने हेतु। घर-घर संपर्क अभियान-पुस्तिकाएं और साहित्य वितरण। हिंदू सम्मेलन-बस्तियों और नगरों में सामाजिक एकता का प्रतीक।

युवा सम्मेलन-भविष्य की पीढ़ी में नेतृत्व का विकास।

सामाजिक सद्भाव बैठकें-हर स्तर पर संवाद। विशेष शाखा सत्र-शाखा विस्तार और कार्यकर्ता सशक्तिकरण। विश्लेषकों का मानना है कि संघ इस अवसर को केवल उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य के संगठनात्मक विस्तार और सामाजिक प्रभाव के पुल के रूप में देख रहा है। **केरल और दक्षिण भारत में जनसंपर्क अभियान** नवंबर 2025 से जनवरी 2026 तक संघ ने विशेष रूप से दक्षिण भारत पर ध्यान केंद्रित किया है।

उद्देश्य और पहल

गांव-गांव पहुंचकर संवाद करना। हिंदू सम्मेलन-मंडल व ग्राम स्तर पर। सामाजिक सद्भाव बैठकें-जाति और संप्रदाय पर संवाद। युवा संवाद-पर्यावरण, राष्ट्र-निर्माण और सेवा पर चर्चा। संघ के प्रांत प्रचारक ने कहा-'समरसता केवल विचार नहीं, व्यवहार में उतरे तभी उत्सव सार्थक है।' यह अभियान दशार्ता है कि संघ ग्रामीण और युवा भारत को शताब्दी पर्व का केंद्र बिंदु बनाना चाहता है।

शताब्दी वर्ष का समापन: विजयदशमी 2026

वर्षभर की गतिविधियों के बाद विजयदशमी 2026 को शताब्दी पर्व का समापन होगा। इसमें पूरे वर्ष की रिपोर्टिंग, अनुभव-साझा और आगामी शताब्दी की दिशा तय की जाएगी।

चरण-दर-चरण यात्रा

मार्च 2025-अइढरः शताब्दी कार्ययोजना का खाका।

अगस्त 2025-दिल्ली संगोष्ठीः बौद्धिक विमर्श।

अक्टूबर 2025-व३२५ 2025 की शुरूआत।

नवंबर 2025-जनवरी 2026-दक्षिण भारत में संपर्क अभियान।

अक्टूबर 2026-समीक्षा और समापन।

संघ और सामाजिक पुनर्निर्माण

फ़र के शताब्दी पर्व ने एक स्पष्ट संदेश दिया है-'समाज-निर्माण ही राष्ट्र-निर्माण है।' सामाजिक समरसता-जातिगत विघटन से परे भाईचारा। पारिवारिक जागृति-संस्कार और जिम्मेदारी।

पर्यावरण चेतना-प्रकृति-संरक्षण।

आत्मनिर्भरता-युवाओं में स्टार्टअप और नवाचार।

नागरिक कर्तव्य-लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी। यह समग्र दृष्टिकोण संघ को केवल एक संगठन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन के रूप में स्थापित करता है।

समालोचनात्मक दृष्टि: संघ का भविष्य-मार्ग

राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि संघ का यह शताब्दी पर्व उसके भविष्य के एजेंडे का रोडमैप है। अब संघ सामाजिक-आर्थिक विमर्श, संघ शिक्षा, पर्यावरण और नवाचार में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय विस्तार-विदेशी भाषाओं में साहित्य और विश्व के 18 प्रमुख स्थलों पर कार्यक्रम। युवाओं में पकड़-15-30 आयु वर्ग को लक्ष्य कर भविष्य का नेतृत्व गढ़ना।

उत्सव और परिवर्तन का संगम

संघ का सौवां वर्ष केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि भविष्य का संकल्प है। संघ प्रमुख मोहन भागवत के शब्दों में-'हमारा 100वां वर्ष आत्ममंथन और आत्मविस्तार का समय है। संघ कोई सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण है। शताब्दी पर्व आने वाले सौ वर्षों के भारत का रूप गढ़ने का प्रयास है'।

राष्ट्र निर्माण
औद्योगिक विकास का नया ठिकाना

नोएडा में इलेक्ट्रॉनिक्स, बुंदेलखंड में डिफेंस कॉरिडोर, वाराणसी में टेक्सटाइल और जेवर में एशिया का सबसे बड़ा हवाई अड्डा–ये सब इस बात का संकेत हैं कि हमारा यूपी अब केवल खेती का राज्य नहीं, भारत का नया औद्योगिक हब बनकर उभर रहा है। युवाओं को उद्यम और नई तकनीकों का ज्ञान उत्तर प्रदेश में तेजी से मिल रहा है।

साभार : सोशल मीडिया

साभार : सोशल मीडिया

आलोक मालवीय

गंगा-यमुना की उपजाऊ धरती पर सदियों तक कृषि ही मुख्य आधार रही है। आज इसी उत्तर प्रदेश में औद्योगिक क्रांति एक नये दौर में प्रवेश कर चुकी है। नोएडा में इलेक्ट्रॉनिक्स, बुंदेलखंड में डिफेंस कॉरिडोर, वाराणसी में टेक्सटाइल और जेवर में एशिया का सबसे बड़ा हवाई अड्डा–ये सब इस बात का संकेत हैं कि हमारा यूपी अब केवल खेती का राज्य नहीं, भारत का नया औद्योगिक हब बनकर उभर रहा है। युवाओं को उद्यम और नई तकनीकों का ज्ञान उत्तर प्रदेश में तेजी से मिल रहा है। नये उद्यम लगाना इतना आसान बन गया है कि नित नये लघु उद्योग लगते जा रहे हैं। उद्योगों के लगने में सबसे बड़ी भूमिका निभा रही हैं सडकें। नये-नये फ्लाईओवर और चमचमाती सडकें उद्योगों को गति दे रही हैं। उत्तर प्रदेश अब निवेशकों की पहली पसंद बन गया है। मजबूत बुनियादी ढांचा और नीतिगत स्पष्टता इसकी सबसे बड़ी ताकत है। दिल्ली-एनसीआर और पूर्वी भारत से कनेक्टिविटी उत्तर प्रदेश के प्रदर्शन को और अव्वल बना रही है। सड़कों का जाल और एक्सप्रेस-वे इसमें महती भूमिका अदा कर रहे हैं।

निवेशक अनुकूल नीतियां भी उद्यम क्षमता को और अधिक मजबूती प्रदान कर रही हैं। उप्र औद्योगिक नीति-2022 और विभिन्न सेक्टर की विशिष्ट नीतियाँ निवेशकों को आकर्षित कर रही हैं, जिसकी वजह से ओप्पो, वीवो सरीखी कंपनियों ने नोएडा में अपनी बड़ी-बड़ी फैक्ट्री लगाकर काम शुरू कर दिया है।

प्रमुख पहलें

सिंगल विंडो सिस्टम, त्वरित स्वीकृति
कर और स्टांप शुल्क छूट, पूँजी निवेश को प्रोत्साहन
विशेष औद्योगिक नीतियां
टेक्सटाइल और हैंडलूम नीति
इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग नीति
आईटी एवं स्टार्टअप नीति

फिल्म सिटी और मीडिया नीति ने प्रदेश में आधुनिक बदलाव किए हैं। 2023 में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 33 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। इलेक्ट्रॉनिक्स, डिफेंस, ग्रीन एनर्जी और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में ज्यादा रुचि देखने को मिली। सबसे ज्यादा क्रांतिकारी बदलाव सोलर पावर में देखने को मिला है। उत्तर मध्य रेलवे ने अपनी 60 प्रतिशत बिजली सोलर से बनानी शुरू कर दी है। इसके साथ सोलर बिजली घर बिजली बनाने में महती भूमिका अदा कर रहा है।

प्रदेश में बड़े औद्योगिक प्रोजेक्ट लग रहे हैं, इसके साथ ही डिफेंस कॉरीडोर का निर्माण तेज गति से हो रहा है। उत्तर प्रदेश को डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरीडोर के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा उत्पादन का केंद्र बनाया जा रहा है। औद्योगिक जनपद कानपुर, झांसी, अलीगढ़, लखनऊ, आगरा, चित्रकूट, प्रयागराज, भदोही, बनारस औद्योगिक विकास की गाथा लिख रहे हैं। प्रदेश में प्रमुख निवेशक कंपनियां अमूल, टाटा, अडाणी, महिंद्रा डिफेंस, भारत डायनामिक्स और अंतरराष्ट्रीय रक्षा उपकरण निमार्ता भी विकास को तेज गति दे रहे हैं।एक्सप्रेस-वे और बुनियादी ढांचा विकास की रीढ़ होता है, इसे औद्योगिक विकास का आधार माना गया है। मजबूत कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक्स होना प्रदेश को गौरवान्वित करता है। सूबे की राजधानी को पूर्वांचल से जोड़ने वाला पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे (341 किमी)-पूर्वी उत्तर प्रदेश का औद्योगिक कनेक्टर बनकर उभरा है।

इसी तरह बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे (296 किमी)-डिफेंस कॉरीडोर को गति दे रहा है। मेरठ से संगमनगरी प्रयागराज को जोड़ने वाले गंगा एक्सप्रेस-वे (594 किमी) का कार्य तेज गति से पूरा किया जा रहा है। इसी क्रम में जेवर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा-एशिया का प्रमुख कार्गो और पैसेंजर हब बनने को बेकरार है। वाराणसी में मल्टी मॉडल टर्मिनल-गंगा जलमार्ग से औद्योगिक माल परिवहन के लिए विकसित हो रहा है। लघु उद्योग संघ, कानपुर का कहना है कि- 'जहां सडक और हवाई कनेक्टिविटी होगी, वहीं उद्योग तेजी से पनपेंगे।' औद्योगिकरण का सीधा लाभ रोजगार सृजन और पलायन में कमी के रूप में सामने आ रहा है। जो युवा काम की तलाश में दूसरे प्रदेशों में जाते थे, अब उनके द्वार पर रोजगार दस्तक दे रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी सेक्टर में लाखों युवाओं को रोजगार मिल चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों में टेक्सटाइल और खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां लगातार खुल रही हैं। महिला उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति को लगातार प्रोत्साहन दिया जा रहा है। ग्रामीण-शहरी संतुलन और सामाजिक स्थिरता में योगदान से प्रदेश विकास की नई इबारत लिख रहा है।

औद्योगिक इकाइयों के ले भूमि अधिग्रहण और पर्यावरणीय स्वीकृतियां सामाजिक सरोकार का काम कर रही हैं। ऊर्जा आपूर्ति और बिजली दरें सोलर पावर से लोगों को राहत दे रहीं हैं। उच्च कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता को देखते हुए कौशल विकास केंद्रों की स्थापना की जा रही है। उत्तर प्रदेश अब केवल कृषि का राज्य नहीं, बल्कि नये भारत का औद्योगिक इंजन बन रहा है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के निवेश, डिफेंस कॉरीडोर और विशाल परिवहन नेटवर्क इसे भविष्य में न केवल देश, एशिया के औद्योगिक मानचित्र पर शीर्ष स्थान दिलाने में मदद कर रहे हैं।

यूपी विधानसभा चुनाव

पीडीए पर जूझ रही सपा-भाजपा

उपेन्द्र नाथ राय

उप्र विधानसभा चुनाव 2027 में होने हैं लेकिन सरकार और प्रमुख राजनीतिक दल अभी से चुनावी मोड में आ गये हैं। मुख्य विपक्षी दल सपा अपने चुनाव को धार देने में जुट गई है। लोकसभा चुनाव में सपा ने 37 सीटें जीतकर पीडीए का सफल फार्मूला हासिल कर लिया है। सपा नेताओं में उत्साह है। उन्हें विश्वास है कि आने वाले

बसपा की भी निगाहें

विधानसभा चुनाव में इस बार उनकी सरकार बनेगी। उधर, लोकसभा चुनाव के बाद विधानसभा की नौ सीटों पर हुए उप चुनाव में भाजपा ने छह सीटें कब्जा कर अपनी पीठ ठोक रही है और सपा के पीडीए फार्मूला को विफल बता रही है।विधानसभा चुनाव में कौन बाजी मारेगा, यह पीडीए की सफलता और असफलता पर निर्भर करता है। लोकसभा चुनाव में दलित वर्ग के सपा की ओर झुकाव ने सपा को विजयश्री दिला दी और कुछ दिन बाद ही हुए विधानसभा उपचुनाव में दलित वर्ग का सपा से हुए मोहभंग ने उसे झटका भी दे दिया। अभी, विधानसभा सत्र के दौरान सपा की बागी विधायक पूजा पाल द्वारा विधानसभा में अतीक अहमद को मिट्टी में मिला देने पर योगी आदित्यनाथ की सराहना की गई। इस पर अखिलेश यादव ने उन्हें तुरंत पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया। सपा से निकाले जाने के बाद पूजा पाल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की और कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में गुंडों और माफियाओं को उनकी सही जगह

पहुंचाया जा रहा है, जो एक प्रगतिशील समाज के लिए बहुत जरूरी है। लोकसभा चुनाव के पहले सपा सुप्रीमो व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पीडीए का फार्मूला दिया था। इसको उन्होंने पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक से जोड़ा। उनका दावा रहा कि पीडीए की एकता भाजपा को हराएगी। उसका परिणाम रहा कि उप्र में अब तक की सबसे बड़ी जीत सपा ने हासिल की। अब सपा के इस पीडीए फार्मूले को भाजपा'परिवार डेवलप मेंट अथॉरिटी' बता रही है और इसे परिवारवादी के रूप में परिभाषित कर रही है।

यूपी के अगामी विधानसभा चुनाव में सपा का पीडीए (पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक गठजोड़) और भाजपा द्वारा व्याख्यायित पीडीए (परिवार डेवलपमेंट अथॉरिटी) वाकयुद्ध का मुख्य मुद्दा बनेगा। जीत-हार भी दलित मतदाताओं पर ही निर्भर करेगी। यह वर्ग जिस ओर झुकेगा, जीत उसी की होनी है। अब तक की सपा की राजनीति देखें तो अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव में फार्मूला भले दिया लेकिन

साभार : सोशल मीडिया

लोकसभा चुनाव के बाद कभी उन्होंने दलित वर्ग के लिए आवाज नहीं उठाई। यही कारण रहा कि विधानसभा के उपचुनाव में दलित वर्ग का सपा से मोहभंग हो गया। संभल का मुद्दा हो या फतेहपुर के एक मकबरे में हिंदू धर्म के लोगों द्वारा मंदिर बताकर वहां पूजा के नाम पर उपद्रव करने का मुद्दा हो, सपा मुस्लिम समुदाय के पक्ष में मजबूती से खड़ी दिखी। जबकि दलित वर्ग के किसी मुद्दे को समाजवादी पार्टी ने कभी इतने जोर-शोर से नहीं उठाया। अब यह देखने वाली बात होगी कि आने वाले समय में समाजवादी पार्टी स्वयं को कितना दलित वर्ग के हितैषी के तौर पर कितनी मजबूती से खड़ी दिखाती है।

दलित वर्ग के वोट बैंक में सपा और भाजपा की सेंधमारी के पीछे बसपा का हाशिए पर जाना है। दलित वोट बैंक का ग्राफ बसपा से धीरे-धीरे छिटकता जा रहा है। एक तरफ लोकसभा चुनाव में जहां उसको एक भी सीट नहीं मिली। वहीं दूसरी तरफ विधानसभा चुनाव में कभी पूर्ण बहुमत की सरकार बना चुकी बसपा को पूरे प्रदेश में मात्र एक सीट पर सफलता हासिल हुई थी। बसपा के हासिए पर जाने से दलित वर्ग अपना स्थायी ठौर तलाशने में जुट गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों से दलित समुदाय का एक वर्ग बहुत हद तक उप्र में भाजपा की ओर तो गया लेकिन अभी भी कभी अगड़ों और बनियों की पार्टी कही जाने वाली भाजपा पर उसे पूर्ण विश्वास नहीं हो रहा।

साभार : सोशल मीडिया

विधानसभा की नौ सीटों पर हुए उपचुनाव में सात विधानसभा क्षेत्रों में बसपा के उम्मीदवार तीसरे स्थान पर रहे। इससे बसपा की भी अहमियत समझ में आती है। आगे, आने वाले चुनाव में बसपा भी स्वयं को जिंदा कर सकती है। राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो बसपा आइसोलेशन में अवश्य है, लेकिन वह कभी भी इससे बाहर आ सकती है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि इस बार सपा के लिए करो या मरो जैसी स्थिति है। फिर भी सपा अभी तक वह सक्रियता नहीं दिखा रही है, जो उसे दिखानी चाहिए। वहीं, भाजपा धरातल पर बूथ स्तर तक के पदाधिकारियों को सक्रिय कर चुकी है। सपा और भाजपा में जीत-हार इस बात पर निर्भर करेगा कि हिंदूत्व हावी होगा या पीडीए फार्मूला।

साभार : सोशल मीडिया

कवि सुमित ओरछा

भारतीय समाज 'शासन' की सर्वोत्तम व्यवस्था को 'रामराज्य' की संकल्पना से संबोधित करता है। यह केवल धार्मिक आदर्श नहीं, बल्कि ऐसी शासन प्रणाली है, जिसमें न्याय, समान अवसर, सुरक्षा, समृद्धि और सांस्कृतिक गौरव सबको समान रूप से प्राप्त हो। आज, जब हम देश में हो रहे निर्णय और नीतियों को रामराज्य के आलोक में देखते हैं तो बहुत सी साम्यताएँ अनुभव होती हैं।

मैं जब रामराज्य को पढ़ रहा था तब मुझे वर्तमान के निर्णय और नीतियों में उन विधियों के पालन की सुगंध आई, जिन्हें मैं ग्रंथों में पढ़ता रहा हूँ। फिर मैंने जब इसे और गहराई से देखा तो अनुभव हुआ कि यह महज संयोग नहीं है, यह तो रामराज्य का अनुकरण है।

बाबा तुलसी रामराज्य की जो परिकल्पना उत्तरकांड में लिखते हैं, वह प्रारंभ होती है– 'सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥'

इस विषय को जब मैंने अन्वेषित किया तो मेरे मन में यह विनोदी राजनैतिक दृश्य आए, जो संभव तो नहीं थे, पर हमने होते हुए देखे। जन्मजात शत्रुता का दावा करने वाले और निरंतर कटुता रखने वाले लोग, पीएम नरेंद्र मोदी के शासन में राजनीतिक अस्तित्व बचाने के लिए, उन लोगों से भी प्रेम करते नजर आए, जिनसे प्रेम की कोई संभावना नहीं थी। जैसे शिवसेना और कांग्रेस का मेल, मायावती और मुलायम सिंह यादव का एक मंच पर आना, लालू यादव और नीतीश कुमार का धुर विरोध के बाद भी साथ आना। इसे भी 'रामराज्य का प्रभाव' समझा जाए, जहां शत्रु भी मित्र बनने को विवश हो गए।

'नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥'

जब हम दरिद्रता को मिटाने के प्रयास देखते हैं तो समझ आता है कि सबको पक्का घर के लिए प्रधानमंत्री आवास, घर में शौचालय, हर घर बिजली, स्वच्छ ईंधन उज्ज्वला, हर व्यक्ति का खाता, खाते में जनधन, घर-घर नल– अर्थात दरिद्रता का संपूर्ण समाधान। ये योजनाएँ मात्र विकल्प नहीं, बल्कि रामराज्य की अवधारणा का संकल्प हैं, जिन्हें कठोर परिश्रम और प्रयास से साकार किया जा रहा है।

'सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥'

रामचरितमानस की इन चौपाइयों का तात्पर्य है कि रामराज्य में कोई बुद्धिहीन और गुणहीन नहीं रहना चाहिए। आज के भारत में मोदीजी के स्किल इंडिया मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना और नई शिक्षा नीति ने युवाओं को आत्मनिर्भर और कुशल बनाने का भागीरथ प्रयास किया है। यह रामराज्य की अवधारणा को गढ़ने का ही प्रयास है।

'सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥'

रामराज्य में कृतज्ञता का वर्णन बाबा तुलसी

करते हैं। मुझे सहज ही स्मरण आता है कि देश में हुई उपलब्धियों के कारण एक बड़ा समूह शासन के प्रति अत्यंत सकारात्मक और पक्षधर हो गया है। विपक्ष ने ही इन्हें 'भक्त' कहना शुरू किया। यहां, यह चौपाई भी चरितार्थ होती है। विरोधी भी समझ गए हैं कि मोदीजी के भीतर ईश्वरीय प्रेरणाओं और गुणों की शक्ति है। इसलिए उनके समर्थकों को सामान्य समर्थक नहीं, 'भक्त' कहा जाने लगा।

'दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि ब्यापा॥'

इस चौपाई को पढ़कर स्मरण आता है कि मोदीजी की आयुष्मान भारत योजना विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सुरक्षा योजना है। करोड़ों परिवारों को पांच लाख रुपये तक का निशुल्क इलाज, योग को वैश्विक पहचान, आयुष मंत्रालय और जन-औषधि केंद्रों ने इस चौपाई को चरितार्थ कर दिया है। सरकार आम जनमानस को आरोग्य से जोड़कर उन्हें संताप से मुक्त रखकर रामराज्य की अवधारणा को साकार करना चाहती है।

'अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥'

प्रधानमंत्री ने एयर एम्बुलेंस जैसी सेवाओं का प्रारंभ किया। कोविड-19 महामारी में वैक्सीन मित्र बनकर विश्व को जीवनरक्षक टीके देना, आयुष्मान भारत और जन-औषधि केंद्रों ने जनता को अल्प मृत्यु और पीड़ा से बचाने की शक्ति दी है।

'चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥ राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥'

रामभक्तों के भीतर आज आनंद है। श्रीराम जन्मभूमि के निर्णय से लेकर भूमि पूजन और भव्य मंदिर निर्माण तक ने भक्तों को गौरवान्वित और आत्मिक प्रसन्नता दी है। पूरे भारत में यही दिख रहा है–श्रीराम के भक्त प्रसन्न हैं और राम के विरोधी दुखी।

'हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा॥'

भारतवासी, विश्व में भारत की बढ़ती शक्ति को देखकर गर्वित और प्रसन्न हैं। जी-20, ब्रिक्स, सौर गठबंधन और योग दिवस जैसे मंचों पर भारत की निर्णायक भूमिका ने आत्मविश्वास और हर्ष की लहर पैदा की है।

प्रभु श्रीराम जी अपने शासन के चौथे वर्ष में

साभार : सोशल मीडिया

एक राजसभा का आयोजन करते हैं, जिसमें सब उनसे प्रश्न पूछते हैं और रामजी उसका उत्तर देते हैं। प्रभु श्रीराम जी सुमंत के प्रश्न के उत्तर में अपने शासनादेश में कहते हैं–

'जाति भेदो न ग्रा': स्यानन तथा नयमभिन्नता। विवाहे भोजने भेदः स्वीकृतो न कदापि हि। एकजातिवदातिष्ठे नमंत्रं स्यात मैत्रियोजने॥'

अर्थात मेरे राज्य में किसी भी जातिगत भेदभाव को स्वीकार नहीं किया जाएगा। आज आप देख सकते हैं कि मोदी जी सफाई श्रमिकों और दलित परिवारों के साथ बैठकर भोजन करते हैं, उनके चरण प्रक्षालन करते हैं। यह उसी रामराज्य का संकेत है, जिसमें जातीय भेदभाव का कोई स्थान नहीं था। वर्तमान में सभी वर्गों के सम्मान को सुरक्षित करते हुए ऐसे समरसतापूर्ण कठिन निर्णय भी हुए हैं, जो भेदभाव मिटाने के स्पष्ट प्रयास को दशार्ते हैं।

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम कहते हैं–

'इंदुभूतिकामः स्याद्धि राष्ट्रोस्माकं न चान्यथा।। अन्तर्वहिष्च यत्र स्यादिनतुः पालयः प्रयत्नतः॥'

भारत ने नागरिकता संशोधन अधिनियम के माध्यम से सीमाओं के बाहर धार्मिक प्रताड़ना झेल रहे हिंदू, सिख, बौद्ध और जैन समाज को शरण और नागरिकता दी। यह, वही भावना है जो श्रीराम के वचनों में व्यक्त हुई, जहां करुणा और सुरक्षा का विस्तार सीमाओं से परे था।

वाल्मीकि रामायण में यह भी चेतावनी दी गई है–

'यद्यहिंसा भवें मार्गे दुष्ट चौराश्य तस्कारः। भुवि प्रादुर्भविष्यन्ति त्वशान्तिमहति भवेत॥'

रामराज्य का सिद्धांत था कि अहिंसा की नीति दुष्टों के लिए नहीं है, सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का संहार हो। आज मोदी जी भी यही नीति अपनाते हैं। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक कर आतंकवाद को कड़ा संदेश दिया गया। एनआईए और यूएपीए कानून को सशक्त कर आतंकी नेटवर्क पर प्रहार किया गया। अनुच्छेद 370 हटाना आतंकवाद पोषक समानांतर राजनीति को समाप्त करने का ऐतिहासिक कदम था। जिस लाल चौक पर कभी तिरंगा जलाया जाता था, वहां इस वर्ष गणेश उत्सव की झांकियां निकली हैं। यह बदलते भारत की उपलब्धि है, जिसे मोदीजी ने साकार किया है।

रामचरितमानस में वर्णन है–

'भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥ भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥'

आज, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी वैश्विक नेता के रूप में उभरे हैं। वे सात समंदर पार भी लोकप्रिय हैं। जी-20 की अध्यक्षता, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन और योग दिवस को वैश्विक मान्यता दिलाकर भारत की छवि को सशक्त किया। वे विश्व मंच पर भारतीय परंपरा और मयार्दाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ट्रंप के टैरिफ वार पर जिस धैर्य, गंभीरता और साहस के साथ उन्होंने सूझबूझ का परिचय दिया और भारत के हितों के प्रति अडिगता दिखाई, वह अभूतपूर्व है। यह पूरे विश्व में उस वाक्य का उद्घोष है जिसमें स्वामी विवेकानंद ने कहा था– 'इक्कीसवीं सदी भारत की होगी।'

नरेंद्र मोदीजी के ग्यारह वर्ष केवल राजनीतिक उपलब्धियां नहीं, बल्कि उस शाश्वत स्वप्न की ओर बढ़ते कदम हैं, जिसे हम रामराज्य के नाम से जानते हैं। आज भारत यह कह सकता है कि रामराज्य की संकल्पना अब केवल कल्पना नहीं, बल्कि यथार्थ की ओर बढ़ता हुआ राष्ट्रीय जीवन है।

Festival Celebrations From Traditional to Digital

Courtesy: Social Media

Vijay Garg

Festivals have always been a cornerstone of human culture, serving as moments of joy, reflection, and community bonding. Traditionally, these celebrations have been marked by rituals, gatherings, and age-old customs passed down through generations. However, as the digital age dawned, the way we celebrate festivals has undergone a significant transformation. This blog explores the journey of festivals from their traditional roots to their current digital incarnations, shedding light on how technology has redefined our festive experiences.

The Traditional Essence of Festivals: Historically, festivals were deeply intertwined with religious, agricultural, or cultural practices. Whether it was the lighting of lamps during Diwali in India, the grand parades of Carnival in Brazil, or the quiet reflection of Thanksgiving in the United States, festivals were characterized by physical gatherings, shared meals, and communal participation.

Cultural Significance: Festivals were a means of preserving cultural identity. Rituals, traditional attire, music, and dance were integral parts of these celebrations, serving as a bridge between generations.

Community Bonding: Festivals brought communities together, fostering a sense of belonging and shared identity. They were often the backdrop for strengthening familial ties and renewing friendships.

Physical Participation: From decorating homes to participating in processions, the physical involvement in festivals was seen as an essential part of the celebration.

The Advent of Technology: With the rise of the internet and digital technologies, the landscape of festival celebrations began to shift. The convenience, connectivity, and creativity enabled by digital platforms have introduced new ways to celebrate, particularly in an increasingly globalized and tech-savvy world.

Virtual Gatherings: One of the most significant changes has been the shift from physical gatherings

to virtual ones. Social media platforms like Facebook, Zoom, and Instagram have become popular venues for hosting virtual festival celebrations, allowing people to connect with loved ones across the globe in real-time.

Digital Decorations: Traditional decorations have also seen a digital makeover. Augmented Reality (AR) and virtual design tools allow individuals to create festive atmospheres in their homes with minimal physical effort. Apps now offer everything from virtual Diwali lamps to customizable Christmas trees.

Online Shopping and Gifting: The rise of e-commerce has revolutionized how we shop for festivals. Instead of bustling markets, people now browse online stores for decorations, gifts, and festive attire. Digital gift cards and virtual presents have also become common, catering to the needs of a fast-paced, digital-first world.

The Impact of Social Media: Social media has not only changed how we celebrate but also how we share our celebrations. Platforms like Instagram and TikTok have turned festivals into global events, where trends can go viral and cross-cultural exchanges are the norm.

Hashtag Holidays: Hashtags like MerryChristmas or Diwali2025 have become a way for people to share their festive experiences with a global audience. These digital footprints create a sense of a worldwide community celebrating together.

Influencer Culture: Influencers play a significant role in shaping modern festival celebrations. From fashion tips for Eid to innovative Diwali recipes, influencers provide inspiration and set trends that resonate with their followers.

Virtual Challenges and Contests: Social media has also introduced interactive elements to festivals. Virtual challenges, such as decorating contests or dance-offs, engage users and create a participatory culture around the celebration.

The Role of Digital in Preserving Traditions: Interestingly, while digital platforms have introduced new ways of celebrating, they have also played a crucial role in preserving and reviving traditional practices. Online tutorials, virtual workshops, and cultural apps have made it easier for younger generations to learn about and participate in traditional rituals.

Educational Content: YouTube channels and blogs dedicated to traditional crafts, recipes, and rituals have ensured that cultural knowledge is not lost but rather adapted to modern contexts.

Global Accessibility: Digital platforms have made it possible for diaspora communities to stay connected to their cultural roots. Livestreams of temple ceremonies, virtual Seder dinners, or online cultural festivals allow people to participate in traditional celebrations regardless of their location.

Challenges and Criticisms: Despite the many benefits, the digitalization of festivals has its challenges. The shift to virtual celebrations can sometimes lead to a loss of the personal touch and emotional connection that physical gatherings provide. Additionally, the commercialization of festivals through online platforms has raised concerns about the dilution of cultural and religious significance.

Loss of Physical Connection: Virtual gatherings, while convenient, cannot fully replicate the warmth and intimacy of face-to-face interactions. The sensory experiences-such as the aroma of festive foods, the sound of traditional music, and the feel of intricate decorations-are often missing in digital celebrations.

Commercialization: The commercialization of festivals through online ads, sales, and promotions can sometimes overshadow the true meaning of the celebration, turning it into a consumer-driven event rather than a cultural or religious observance.

Conclusion: The evolution of festival celebrations from traditional to digital reflects broader societal changes driven by technology. While the essence of festivals-community, tradition, and celebration-remains intact, the methods of participation have evolved to accommodate our increasingly digital lives. As we move forward, the challenge will be to balance the convenience of digital celebrations with the richness of traditional practices, ensuring that festivals continue to be meaningful, inclusive, and joyous occasions for all. This topic offers a comprehensive look at how festival celebrations have transformed in the digital age while encouraging readers to reflect on the balance between tradition and modernity in their own celebrations.

(Retired Principal Educational columnist Eminent Educationist street kour Chand MHR Malout Punjab)

दीवाली कोरोना और जुआरी जगत

साभार : सोशल मीडिया

डॉ. श्लेष गौतम
ख्यातिलब्ध अंतरराष्ट्रीय कवि

दीपावली और जुए की दोस्ती-यारी कब से है ना तो इसका मेरे पास कोई ऐतिहासिक प्रमाण है और ना ही दिल्ली लखनऊ के सूचना और गोपनीय विभाग से जारी कोई औपचारिक दस्तावेज या घोषणा पत्र। व्यवहारिकता और लोकाचार के तकाजे से इन दोनों के गहरे और अमिट-अनंत संबंधों की पुष्टि होती है बस। वैसे भी दीपावली में तो शायद पैसे रुपए जेवर,सामान आदि ही दांव पर लगते हों पर घर-बाहर दफ्तर अब तो हर जगह ही किसी न किसी का कुछ ना कुछ दांव पर लगा हुआ है। सीधे-सीधे आते हैं जुआरी भाई लोगों के मामले पर,मधुशाला की तरह जुएं का अड्डा भी भारतीय संविधान की मंशानुरूप धर्म निरपेक्षता,एकता, भाईचारे और समानता का जीता-जागता जीवंत प्रतीक है,जैसे न्यायालय के फैसले के बाद पक्ष-विपक्ष गौण हो जाता है और जीत संविधान की मानी जाती है ठीक उसी तरह जुए में हारे-जीते कोई,जीत अंततः जुआ देवता की होती है। जुआं देवता संबोधन पर मुझे स्त्री विरोधी न समझा जाए क्योंकि अव्वल तो जुआं शब्द पुल्लिंग है,दूसरी बात इसमें स्त्रियों की भागीदारी बेहद कम है लगभग न के बराबर दिखी मुझे लिहाजा जुआ देवता न की जुआं माईया।

बहरहाल सालाना बोनस की तरह जुंआरी भाई लोग दीपावली पर जुआ खेलने का इंतजार करते हैं,और हां एक विशेष बात,मैं यहां पर रेगुलर या बारहमासा जुआरियों की बात कतई नहीं कर रहा जो साल भर जुए की फड़ पर फड़फड़ाते रहते हैं,मैं तो उन सभी की बात कर रहा हूं जो त्योहारी मौज-मस्ती के लिए जुआ खेलते हैं। खैर दुनिया धनतेरस के दिन खरीदारी करती होगी बर्तन जेवर लाई लावा मिठाई आदि यह जुआरी भाई लोग जय जुआ देवता कहते हुए ताश के पत्तों की कई गड्डियां एक साथ खरीदते हैं।अरे भाई अनुभव भी तो कोई चीज होती है लिहाजा खेल के दौरान होने वाली चिराईन और चूं चपड़ में होम होने वाली गड्डियों में यह विशेष रिजर्व ही काम आता है और तो और कई बार किसी की इच्छा कटिंग की तो कुछ की तीन पत्ती की होती है, सो मौके पर कौन खरीदने जाए।

मोहल्ले के साथ्त हिंदुस्तानी राजू, गुड्डू, नाटे मियां,मोन,चिंटू,बबलू डीलर और एस.पी. भाई एक जगह पर एक साथ इकट्ठे हुए। एसपी भाई के घर के पीछे बने गोदाम में रोज जुआं खेलने की सर्व-सहमति बनी, सुबह शाम का शेड्यूल तय हुआ साथ ही आसपास के लुच्चे-लफंगे और प्रोफेशनल जुआरियों की नजरों से बचकर इकट्ठा होने की जुगत लगाई गई। एस.पी. भाई बोले-चिंता की कोई बात नहीं इलाके के दरोगा-सिपाही से गले मिलाप का सिलसिला मैंने बढ़ा दिया है, लॉकडाउन के समय से ही, साथ ही इन दिनों रास्ते बदल-बदल कर नमस्ते ठोकता रहता हूं,मिठाई नमकीन अलग।

तभी नाटे मियां बोले- भाई बाईक कहां रखेंगे हम लोग गोदाम में तो जगह है ही नहीं,रास्ता भी संकरा है ! बबलू डीलर लप से बोले-पगलेठ न बनो आधा दर्जन बाईक खड़ा करना बिल्ली को दूध का न्योता देने जैसा है। राजू बोले-हम इतनी दूर से पैदल आएंगे और बिल्ली दूध ई सब का है ! सीधा-सीधा समझाओ भाई। बबलू डीलर दार्शनिक अंदाज में बोले- सावन के अंधे की तरह दीपावली के मौसम में भीड़ भाड़ का मतलब और वह भी करोना के समय जब हर जगह सोशल डिस्टेंसिंग के कानून लागू है जुए की खड़ी फसल पुलिस हमेशा काटे के लिए

तैयार रहती है,और अगर बाइक में इसी तरह बैठकर आओगे तो पक्का सरकारी जीप में बैठकर जाओगे और जुआ के साथ-साथ करोना के नाम पर 50 धारा अलग। सहमति बन गई। शाम तक सभी खिलाड़ी एस.पी.भाई के गोदाम में बारी-बारी से पहुंचे, बकायदा मास्क लगाए,जेब में दो-दो सैनिटाइजर ठूंसे। जय जुआ देवता के उद्घोष के साथ ही ताश की फेटाई शुरू हो गई।

हंसी-मजाक के बीच जुए का दौर चल पड़ा, बबलू बोले-अबे अब तो मुंह से हटाए लो मास्क कि अंदर हव आऊर ई बार-बार सेनेटाइजर के छिड़काव बंद करो में उलझन होत है, अब जो होई सो होई। गुड्डू बोले-मोनू और चिंटू तो आज तक एक पैसा ब्लाइंड पर नहीं लगाए ट्रेल,रन और कलर के बिना तो यह दोनों चाल ही नहीं चलते। मोनू और चिंटू बहुत खिसियाये है पर बाकी सब ने समर्थन कर दिया। मोनू खिसिया के बोल पड़े जब भगवान आंख देखे खातिर दिए हैं मूंदै खातिर नहीं।

इतने में ही एक बुलेट मोटरसाइकिल की हल्की-हल्की आवाज सबने एक साथ महसूस की। धीरे-धीरे यह आवाज करीब और करीब होने लगी और सब का कलेजा मुंह को आने लगा कुछ तो अभी इसी लॉकडाउन के दौरान फर्जी घूमने-फिरने की खुशी में आगे पीछे बहुत डंडा पाए थे। बहरहाल धड़कन बंद हो इससे पहले पत्ते छुपा दिए गए। एस.पी. भाई सबका चेहरा देखते हुए मन ही मन बुदबुदाये, इतना चाय-नाश्ता सब कराए सरवा नमक की कोई वैल्यू ही नहीं रही। जुबान का कोई मतलब ही नहीं नहीं रहा। भैया ईमानदारी नैतिकता नाम की चीज अपने भारत आई नहीं। तभी बुलेट की आवाज एकदम गोदाम के मुहाने पर आकर थम गई इधर सबकी सांसे थमने और होंठ सिलने लगे। तभी मुहाने से आवाज आई, कल्लू मिस्त्री।

एसपी आवाज पहचान गए और सब को आश्वस्त कर दरवाजा खोले। पहले तो कल्लू के मुंह पर मास्क देखकर नहीं पहचाने पर फिर तस्दीक हो गई कि यह कल्लू ही हैं। कल्लू बोला-भाई बुलेट सर्विस का ट्रायल ले रहे थे कि तेल खत्म हो गया, भाई थोड़ा पेट्रोल मिलेगा क्या! इस सवाल और खलल से

साभार : सोशल मीडिया

गुस्सा तो बहुत आया पर जो भी हो इसका आना पुलिस से तो ठीक ही रहा फिर भी फोकट में तेल ना देना पड़े इसीलिए एस.पी. बोले-कल्लू भाई तेल कहां होगा दोनों गाड़ियां घर के काम से बाहर गई हैं। खैर कल्लू तो निपटा महफिल फिर जमने लगी। बल्लू डीलर बोले इतना डराए के हो तो मत खेला करो में तुम लोग। कऊनो डॉक्टर थोड़ी कहीस जुआ खेलै के लिए। खेल फिर बढ़ने लगा खेलते-खेलते भूख लगना लाजमी था सो एक लोकल रेस्टोरेंट को फोन कर फोन पर ही खाने की होम डिलीवरी का ऑर्डर दे दिया गया।लगभग घंटे भर बाद गोदाम की दरवाजे की कुंडी फिर खड़की।

भूख सबको लग चुकी थी और कल्लू मिस्त्री वाले विवाद के प्रसंग से डर का भूत भी भाग चुका था फट से दरवाजा खोलते ही बबलू डीलर सामने मुखातिब व्यक्ति से बोले-खाना लाए हो उसने एक जबर झन्नाटेदार थप्पड़ बबलू डीलर के गाल पर रसीद करते हुए कहा-खाना नहीं पूरा थाना लाए हैं सभी को सांप सूंघ गया।तभी 10-12 वर्दीधारी अंदर उनके कंधे पर सजे सितारों को देखकर जुआरी भाइयों को अपने सितारे गर्दिश में नजर आने लगे। हम कोतवाली से आए हैं हमें सूचना मिली थी जुएं की जो सच भी साबित हुआ-इंस्पेक्टर बोला। किसका गोदाम घर है ये! इंस्पेक्टर की आवाज गूंजी। एस.पी.भाई की,सिवाय एस.पी.भाई के सभी ने कहा।

एस.पी. यह शब्द सुनते ही इंस्पेक्टर ने गियर बदला और बेहद विनम्र और शांति तथा अतिरिक्त आदर के भाव से कहा-सर बाकी साहबों की तरह आप भी पहले से बता देते,हमसे गलती हो गई है। सर आप कहां के एस.पी. हैं! एस.पी. भाई की आवाज हलक में फंस गई जैसे पहली बार मछली खा रहे व्यक्ति के गले में कांटा। बोले-हम तो इनवर्टर बैटरी की सप्लाई का धंधा करते हैं,हमारा नाम सूर्यप्रकाश है और सभी दोस्त यार हमें प्यार से एस.पी. कहते-बुलाते हैं। इसके बाद सातों हिंदुस्तानी जुआरी भाई जमीन पर ताश के पत्तों की तरह और यूज्ड कोरोना मास्क की तरह बिखरे-बिछे नजर आए।

एक सिपाही ने भी कहा-अरे सर देखिए यहां सोशल डिस्टेंसिंग भी नहीं है,और पैर से ऑपरेट होने वाली सैनिटाइजिंग मशीन भी, और सर देखिए जो गड्डी और पैसे दिख रहे हैं उन पर भी नहीं लग रहा है कि सेनेटाइजर का छिड़काव हुआ है, न छिट्टा दिखाई दे रहा मना ही खुशबू आ रही है,नामुराद जुआरी। बहरहाल लगभग 4 लाख नकद 10 अंगूठी, सोने की जंजीर आदि लेकर 8 लाख की वसूली हुई।

बहुत हाथ जोड़ने और घर-परिवार का वास्ता देने के बाद गिरफ्तारी तो नहीं पर नजराने के तौर पर छापामारी दस्ते में शामिल सभी वीरों के घर दीपावली का उजाला फैल सके इसलिए 1-1 जोड़ी नई बैटरी इंवर्टर का इंतजाम किया गया। रेस्टोरेंट की होम डिलीवरी का इंतजार अब बेकार था,सभी का पेट लात-जूते और मुक्के से भर चुका था जलालत मिली सो अलग,लंगड़ाते हुए बबलू डीलर बोले-मुखबिरी भई है,कल्लू मिस्त्री साला दिल का भी काला निकला। एस.पी. भाई तुम बिना हमसे पूछे ओका मना कर दियो आऊर ऊ झल्ल में पुलिस के कंधे पर सर रख दिहिस। अगले दिन के समाचार पत्रों में एक प्रमुख खबर छपी,लगभग बोल्ड अक्षरों में कि,पुलिस का त्वरित छापा जुआरियों में जबरदस्त हड़कंप,अंधेरे का लाभ उठाकर भागे मगर मौके से चार ताश की गड्डी रुपये 5000 नकद बरामद।

साभार : सोशल मीडिया

एशिया कप ट्रॉफी

आरपार की लड़ाई का बना लिया है मूड

चोर मोहसिन नकवी पर बीसीसीआई बड़ा एक्शन लेने की तैयारी में

एशिया कप 2025 टूनार्मेंट का फाइनल मुकाबला 28 सितंबर को दुबई के मैदान पर खेला गया था, जिसमें सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में टीम इंडिया ने खिताब को अपने नाम तो किया था, लेकिन उन्हें ट्रॉफी अब तक नहीं सौंपी गई है। एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) के अध्यक्ष व पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के चेयरमैन मोहसिन नकवी सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं। अब उन्होंने भारत द्वारा जीती गई एशिया कप ट्रॉफी को लेकर नया फरमान सुनाया है। एशिया कप की ट्रॉफी को लेकर एशियन क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष मोहसिन नकवी जो पीसीबी के भी अध्यक्ष हैं वह ट्रॉफी ना देने की जिद पर अड़े हुए हैं। अब बीसीसीआई ने एशिया कप ट्रॉफी चोर मोहसिन नकवी के खिलाफ बड़ा एक्शन लेने की योजना बना ली है।

बीसीसीआई वर्ल्ड क्रिकेट से नकवी को बैन करने की रखेगा मांग

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी के खिलाफ एशिया कप की ट्रॉफी को लेकर जारी ड्रामे के बीच अब उनके खिलाफ बड़ा एक्शन लेने की तैयारी कर ली है। एक एजेंसी के अनुसार भारतीय क्रिकेट बोर्ड नकवी को सेंसर करने और आईसीसी में निदेशक पद से हटाने की योजना बना रहा है।

इससे पहले बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने साफ तौर पर कहा था कि एशिया कप का खिताब नकवी की व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है और उन्हें इसे जल्द से जल्द उन्हें भारतीय टीम को लौटाना चाहिए। मोहसिन नकवी के पास बीसीसीआई को इसे भेजने से इंकार करने का कोई अधिकार नहीं था, जो इस आयोजन का आधिकारिक मेजबान था।

टीम इंडिया ने एशिया कप में तीनों बार दी पाकिस्तान को मात

सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में एशिया कप 2025 टूनार्मेंट में टीम इंडिया का अजेय अभियान देखने को मिला, जिसमें उन्होंने ग्रुप स्टेज से लेकर फाइनल मुकाबले तक पाकिस्तानी टीम का तीन बार सामना किया। भारतीय टीम ने तीनों ही मुकाबलों में पाकिस्तान को मात दी, फाइनल मुकाबले को टीम इंडिया ने 5 विकेट से जीत दर्ज की थी। इसके बाद टीम इंडिया खिताब जीतने के बावजूद वहां से बिना ट्रॉफी लिए देश वापस लौट आई थी। मैच के बाद की प्रेजेंटेशन सेरेमनी लगभग एक घंटे तक देरी से शुरू हुई थी और अंत में उसे समय से पहले खत्म कर दिया गया, जिसमें टीम इंडिया ने पहले ही साफ कर दिया था कि वह मोहसिन नकवी के हाथों से ट्रॉफी नहीं लेंगे।

पानी ने आग लगाई!

अनूप मणि त्रिपाठी

'सावन में लग गई आग..', 'टिप-टिप बरसा पानी, पानी ने आग लगाई' जैसे गानों का अर्थ मैं पहले नहीं समझ पाता था। बहुत परेशान रहता था कि प्यास बुझाने, शीतल करने वाले पानी से भला आग कैसे लग सकती है ! फिर थोड़ा बड़ा हुआ या यूं कहें जवान हुआ, तो ऐसे गानों के मानी समझ में आया, वही जो इस वक्त आप मुस्कुराते हुए समझ रहे हैं। मगर अब कहने में मुझे कोई झिझक नहीं कि मैं अपनी जवानी के दिनों में तब भी गाने के सही माने न समझ सका। हां, इस बार की झमाझम पहली बरसात ने ही ऐसे गानों के असली मानी समझा दिया।

सचमुच बंधू, पानी से आग लगती है। वाकई, पानी आग लगा सकता है। पानी बरसना महज किसी फिल्मी गीत का कोई सिचवेशन नहीं, किसी कवि के कविता लिखने का भाव नहीं, विरह में व्याकुल किसी प्रेमिका के पानी में भीगने का चांस नहीं। इसे पानी नहीं परीक्षक समझिए, परीक्षक। होता तो स्वयं तरल है, मगर परीक्षा लेता है बहुत कड़क। अब देखिए न, यह बरसता पानी कितनों की कैसी-कैसी परीक्षा ले रहा है-

नाली को खुद चोक होने से बचने की, सीवर का रीवर न बनने की, कूड़ा-कर्कट के अपनी जगह पर जमे रहने की, नालों का भावुकता में न उफनाने की, नई सड़कों को अपना फिगर मेंनटेन रखने की, पुरानी सड़कों को अपनी देह पर पडे.गढ्ढों को तालाब न बनने देने की, लाइट के लगातार रौशन रहने की, पम्पिंगसेट के रुक-रुक के न चलने की, संक्रामक रोगों के फैलने की तीव्र रफ्तार की, ट्रांसफार्मर का खुद को न दगने से बचाने की, लोहे के खम्भों को अपने ऊपर कंरट को दौड़ने से रोकने की, लबलबाते पानी में छुपे खुले मेनहोल की टोह पाने की आदमी के टोहू प्रवृत्ति यानि सिक्स सेंस की, वीआईपी ऐरियों को अपनी 'प्रेस्टीज' बचाने की, पिछडे.इलाकों को इतिहास न दोहराने की, समय पर कार्यालय आने की, देर से घर न पहुंचने की, नौनिहालों के स्वस्थ्य रहने की, बड़ों के बीमार न पड़ने की, मच्छर-मखियों के तैरने की, वाहन के साइलेंसर के न डूबने की । उफ ! यह बरसता पानी परीक्षा नहीं अग्निपरीक्षा लेता है। अग्निपरीक्षा !

कल तक जिस शहर को हम सोने की लंका समझ इतराते थे, जरा सी बरसात ने उसे पल भर में कैसे भस्म कर दिया। और हम इस गम के दरिया में न पूरी तरह से डूब रहे न उतरा रहे। शहर पानी-पानी हो रहा और उसके साथ में हम । जिन्होंने कभी विकास की गंगा बहाने की बात करके हम से वोट मांगे थे, वे सरकार आकर खुद देख लें कि नालियों से पानी सरक नहीं रहा और घरों से पानी निकल नहीं रहा ! कुछ देर की बरसात, फिर व्यवस्था इसके सामने पानी मांगने पर विवश ।यह बरसात नहीं आसां, बस इतना समझ लीजे, एक आग का दरिया है और व्यवस्था को डूब के जाना है। इसे बरसात का आग मूतना नहीं तो क्या कहेंगे ! अफसर-बाबू बनने के लिए कहां एक बार परीक्षा पास करनी

साभार : सोशल मीडिया

पड़ी, मगर यह मुई बरसात हर साल परीक्षा लेती है। इधर बादल बरस रहे, उधर नगर निगम के कंट्रोल रूम में शहरवासी। कह रहे, हुजूर इत्ता तो बताइए इस बरसात के मौसम कैसे हो बसर ! और व्यवस्था गरज रही है कि आप बरसात को छोड़ हमारी जान के पीछे क्यों पड़ रहे हैं ! अब व्यवस्था को कौन समझाए, अगर वह पहले से जानदार होती, तो इत्ती सी बरसात से इत्तों की जान पर न बन आती। अभी तो यह इब्तेदाए बरसात है आगे-आगे देखिए होता है क्या !

खुदाया ! इस बार भी बरसात हमारे शहर की कड़ी परीक्षा लेगी। या यूं कहे बरसात का पानी सारे शहर में आग लगाएगा। जब बरसात होती है, तब शहर रोता है, उसकी आशाएं बिलखती हैं, उसका रूतबा घटता है, उसका गुरूर टूटता है, शिकायतों-बदइंतजामी के ऊंचे ढेर पर बैठा बेबस शहरी सुलगता है, सूअरों का झुण्ड बेफिक्री से कीचड़ में लोटता, पानी में छई छप छई करता है। वास्तव में, बरसात में सुअरों की मौज होती है और व्यवस्था कुत्ते की मौत मरती है।

लेखक एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार है

अरबाज के बच्चे के लिए दुआ मांगने लालबाग पहुंची मलाइका

बॉलीवुड अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा जो की हर फैशन शो और पार्टी के जान मानी जाती है वो जब सूट पहने बिंदी लगाए पंडाल में बप्पा के दर्शन के लिए पहुंचेंगी तो आपको कैसे लगेगा। कुछ ऐसा ही नजारा मुंबई के लालबागचा राजा से सामने आया है। दरअसल, मलाइका अरोड़ा लाल बाग के राजा के दर्शन करने के पहुंची हैं। इस दौरान उनका स्पॉटेड वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है जो कि काफी तेजी से वायरल हो रहा है। मलाइका अरोड़ा इस दौरान टील पाकिस्तानी सूट में बनी ठनी गजब के अंदाज में दिखाई दे रही हैं। मलाइका अरोड़ा ने अपने इस लुक को और ज्यादा खूबसूरत बनाने के लिए गले में डायमंड नेकलेस और माथे पर बिंदी लगाई हुई थी। इसके साथ ही हसीना ने जुल्फों को खुला छोड़ा हुआ था। मलाइका का लाल बाग से सामने आया ये वीडियो सोशल मीडिया पर मिनटों में वायरल हो गया है। इसके साथ ही सोशल मीडिया यूजर्स मलाइका के इस वीडियो पर एक से बढ़कर एक मजेदार कमेंट और रिएक्शन दे रहे हैं। एक यूजर का कहना है कि तलाक और फिर बॉयफ्रेंड से ब्रेक अप के बाद मलाइका खुद को संभलने के लिए भगवान का सहारा ले रही हैं। तो वहीं एक यूजर ने चुटकी लेते हुए लिखा मलाइका बप्पा से अपने एक्स पति अरबाज खान के होने वाले बच्चे के लिए दुआएं मांगने के लिए गई थीं।

पंजाब बाढ़ में मदद के लिए पहुंचे रणदीप हुड्डा

पंजाब में आई बाढ़ की तबाही के बीच, अभिनेता रणदीप हुड्डा ने गुरदासपुर में प्रभावित परिवारों का साथ देने के लिए कदम बढ़ाया है। पिछले कुछ हफ़्तों से भारी बारिश और नदियों के उफान ने पंजाब को बुरी तरह प्रभावित किया है। इस आपदा ने हजारों परिवारों को बेघर कर दिया, घर, फसलें, पशुधन और रोजगार तक सब तबाह कर दिया। गुरदासपुर उन ज़िलों में से एक है जहां लोग अब भी मुश्किल हालात से जूझ रहे हैं। रणदीप हुड्डा लंबे समय से ग्लोबल सिख्स एनजीओ के फाउंडर अमरप्रीत सिंह और अपने करीबी दोस्त मनिंदर सिंह के साथ जुड़े हुए हैं। कश्मीर से केरल तक, मणिपुर से लेकर महाराष्ट्र और अब पंजाब-यह टीम पिछले 10 सालों से हर संकट की घड़ी में राहत पहुँचाती रही है। रणदीप हमेशा से ऐसे कठिन समय में लोगों के साथ खड़े रहना चाहते हैं।

चोरी-छिपे बिजनेसमैन से नरगिस फाखरी ने की शादी

नरगिस फाखरी, जिन्होंने रॉकस्टार फिल्म से दर्शकों का दिल जीता था, इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में हैं। साल 2025 में ऐसी खबरें सामने आईं कि नरगिस ने अपने कश्मीरी बॉयफ्रेंड टोनी बेग से शादी कर ली है। हालांकि, एक्ट्रेस ने कभी इस शादी की तस्वीरें शेयर नहीं कीं और ना ही ऑफिशियल अनाउंसमेंट किया। हाल ही में फराह खान एक इवेंट में नरगिस और टोनी के साथ नजर आईं। इस दौरान उन्होंने टोनी को बुलाकर अपनी 'वाइफ' नरगिस के साथ पोज देने के लिए कहा। फराह की यह बात सुनकर लोगों को यकीन हो गया कि नरगिस और टोनी की शादी की खबरें सच हैं। नरगिस का जन्म 1979 में हुआ था, जबकि टोनी का जन्म 1984 में बताया जाता है। यानी दोनों के बीच 5 साल का उम्र का अंतर है। फिलहाल नरगिस 45 साल की हैं और टोनी 41 साल के। फरवरी 2025 में दोनों ने लॉस एंजिल्स में एक प्राइवेट शादी की। रेडिट पर वायरल हुई तस्वीरों में एक बड़ा केक और सजावट पर 'एनएफ' और 'टीबी' के अक्षर दिखे थे। नरगिस ने स्विट्जरलैंड से एक फोटो पोस्ट की, जिसे लोगों ने उनका हनीमून समझा। कहा जाता है कि शादी बेवरली हिल्स के फोर सीजन्स होटल में हुई थी और मेहमानों को फोटो खींचने से मना किया गया था। यही वजह है कि उनकी वेडिंग पिक्चर्स सामने नहीं आईं।

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक रहेगा

प्रयागराज से प्रकाशित

राज, समाज, साहित्य, संस्कृति, कला एवं पर्यटन की राष्ट्रीय पत्रिका/समाचार पत्र

आप भी अपना विज्ञापन देकर कारोबार को बढ़ाएं

हर तस्वीर एक कहानी बताती है और हम अपनी पत्रिका से लाखों को बताते हैं। हम आपके लिए ऐसी तस्वीरें लेकर आए हैं जो बिना किसी भेदभाव के वास्तविक दुनिया और लोगों के बारे में सच्चाई बताती है।

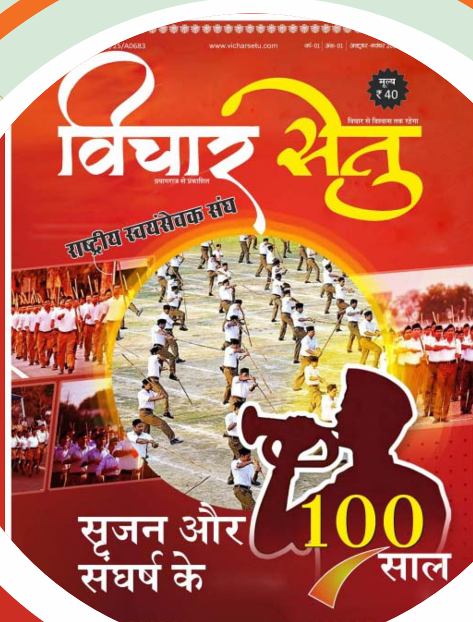

विचार सेतु

विचार से विश्वास तक रहेगा

प्रयागराज से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय : 11/2सी/1क्यू, भोला का पुरा,
प्रीतम नगर, धूमनगंज,
प्रयागराज -211011

Mob. No. 9598163216-7007044100
Website: www.vicharsetu.com
e-Mail: vicharsetu2024@gmail.com

Follow us

RNI No. : UPBIL/25/A0683

प्रकृतिवेदा

WELLNESS CENTER

प्राकृतिक रोगमुक्त दुनिया

अगर आप किसी भी बीमारी से परेशान हैं
और इलाज करा कर थक गये है।
तो आपको मिल सकता है इसका स्थाई समाधान ।

आपकी कोई भी बीमारी रिवर्स हो सकती है, प्रकृतिवेदा वैलनेस सेंटर में जहां पर प्राकृतिक चिकित्सा के सभी आयाम जैसे आयुर्वेद, पंचकर्म, योग, ध्यान नेचुरोपैथी, फिजियोथेरेपी न्यूरो थेरेपी, एक्यूप्रेशर, प्राकृतिक आहार, के विशेषज्ञों द्धारा सभी बीमारियों का जड़ से इलाज संभव है और इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है ! पूरी तरह से शुद्ध, प्राकृतिक एवं जैविक जड़ी बूटियों से बनाए गए प्रोडक्ट जो कि काफी रिसर्च के बाद खुद की मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में शास्त्रोक्त विधि से निर्माण किया गया है, जिसकी वजह से रोगों में बहुत ही लाभकारी परिणाम मिलते हैं।

आयुर्वेद

नेचुरोपैथी

पंचकर्म

योग

मेडिटेशन

एक्यूप्रेशर

प्राकृतिक आहार

न्यूरो थेरेपी

पता : D8 NSIC नैनी (सरगम के पास) प्रयागराज

www.prakitivedawellness.com Mob.: 8400450109, 8400450101

सिटी सेंटर-होटल प्रयाग इन, निकट आकाशवाणी अशोक नगर, प्रयागराज